कामकाजी, छोटी आयु के बच्चों की शुरूआती पठन व लेखन की प्रक्रिया का अध्ययन

Organisation for Early Literacy Promotion
ELP

टीचर्स रिसर्च फैलोशिफ के अन्तर्गत रिसर्च प्रोजेक्ट रिपोर्ट
सी.एल.एल.सी फलटन को प्रस्तुत

शोधकर्त्ता : पुखराज माली

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पृष्ठ भूमि

प्रारंम्भिक साक्षरता परियोजना (ई.एल.पी.) ने राजस्थान मे रात्रिशालाओ के साथ कार्य जनवरी 08 मे ''वेयर फुट कालेज'' एस.डब्ल्यू.आर.सी तिलोनिया की साझेदारी के साथ 8 रात्रिशालाओ मे लागू किया गया, जो कि अजमेर जिले के सिलोरा पंचायत समिति के कदमपुरा क्षेंत्र मे हैं। इसके पश्चात 2009 मे इसी कार्य को एस.डब्ल्यू.आर.सी. से जुड़ी संस्थाओं के लगभग 111 रात्रिशालाओ में लगभग 2500 बच्चो को ई.एल.पी परियोजना से जोडा गया। यह सभी रात्रिशाला एस.डब्ल्यू.आर. के फील्ड सेन्टर के कार्य क्षेत्र में है, और राजस्थान के चार जिलों में फेली हुई है। ई.एल.पी की विधियों को इन रात्रिशालाओ में इस सोच से लागू किया गया कि इन्हें स्थानीय परिवेश के अनुकूल बनाया जाएं । फील्ड विजिट, रात्रिशाला के बच्चो का अवलोकन करके एवं शिक्षको के साथ निरन्तर बैठको द्वारा इस कार्य का मॉनीटर किया गया। ई.एल.पी. द्वारा बनाए गए विशेष मूल्यांकन एव अंकीकरण प्रपत्रों द्वारा बच्चो के शैक्षणिक स्तर की प्रगति पर निरन्तर दृष्टि रखी गई। शिक्षको का प्रशिक्षण एक निरन्तर प्रक्रिया है।

समय–समय पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित की जाती है। एस.डब्ल्यू.आर.सी के शिक्षा कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण किया गया है। कक्षाओ मे ई.एल.पी. विधि को लागू करने के लिए एस.डब्ल्यू.आर.सी व ई.एल.पी. की टीम मिल कर रात्रिशालाओ का भ्रमण करते है इस विधि की सामग्री को कक्षा के अनुभव लेकर एवं समयबद्ध कार्य योजना बना कर लागू किया गया है । ई.एल.पी की विधियों को रात्रिशालाओ मे लागू करते समय यह कोशिश रहती है कि उस समाज के परिवेश व ढांचे की समझ को और गहरा किया जाए, जिसका असर बच्चो के सीखने पर होता है। साथ ही मे जिस समुदाय से बच्चे आते है उनका साक्षरता व शिक्षा के प्रति सोच व दृष्टिकोण को भी समझने का प्रयास किया जाता है। इस क्षेत्र मे रात्रिशालाओ मे जो बच्चे आते है वह समाज के गरीब व पिछडे वर्गो से है और उन परिवारो से जो समाज के हाशिये पर जीते है। यह बच्चे बहुत छोटी उम्र से ही अपने परिवारो के प्रोढो के साथ दैनिक जीवन के संघर्ष व जिम्मेदारिया बॉटते है, ज्यादातर बच्चे दिन मे काम करते है चाहे घर का काम है या बाहर खेत मे । काफी बच्चे अपना दिन पशुओ को चराने मे बिता देते है।

सी.एल.एल.सी के टीचर फैलोशिप कार्यक्रम के तहत ई.एल.पी के दो फील्ड समन्वयक व सहायक फील्ड़ समन्वयक ने एस.डब्ल्यू.आर.सी की रात्रिशालाओ में यह अध्ययन कार्य किया है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आभार :

सर्वप्रथम इस अध्ययन में सहयोग देने वालों को हम धन्यवाद देना चाहते हैं। जिन्होंने निरन्तर इस अध्ययन को करने में सहयोग दिया। इस अध्ययन में मुझे बहुत से लोगों द्वारा समय–समय पर मार्ग दर्शन मिला। अध्ययन के तहत् जो भी समस्याएं आई उन्हें धीरज के साथ निपटाया और जिस उद्देश्य से यह अध्ययन किया गया था उसे पूरा करने में मदद की। इन सब का सहयोग इस अध्ययन को करने में महत्त्वपूर्ण रहा है। हम निम्न सभी का धन्यवाद व आभार व्यक्त करते हैं :–

- **C.L.L.C. संस्था फलटन –** जिन्होंने Fellow Ship उपलब्ध करवाकर इस अध्ययन को संम्भव करवाया ।
- **ड़ॉ. मैक्सीन वर्न स्टीम – प्रगति शिक्षण सस्थान फलटन –** जिन्होंने इस अध्ययन को करने के लिए हमारा चयन किया एवमं हमें प्रोत्साहित किया।
- **S.W.R.C तिलोनिया शिक्षा विभाग, श्री रामेश्वर जी, शिक्षा कार्यकर्ता, रात्रिशाला शिक्षक, श्री शिवराज जी व अन्य सदस्य –** जिनके सहयोग के बिना यह अध्ययन कार्य पूरा नहीं हो पाता ।
- **ELP निर्देशक श्रीमति कीर्ति जयराम –** जिन्होंने हर कदम पर हमारा मार्ग दर्शन करके अध्ययन की पद्धतियों से हमें अवगत करवाया। एकत्रित किया गया ड़ेटा का विश्लेषण करने में हमारा मार्ग दर्शन किया एवमं अध्ययन की फाइनड़िग को प्रस्तुत करने में हमारा मार्ग दर्शन किया।
- **ELP समन्वयक किरण दुबे –** जिन्होंने फील्ड़ स्तर पर अध्ययन करने में व केस स्टेड़ी को करने में मार्ग दर्शन किया।
- **ड़ॉ. आरती साहनी रिसर्च समन्वयक –** जिन्होंन अध्ययन की प्रस्तुति करने में हमारा सहयोग किया।
- **श्री अमर सिंह – प्रोग्राम सहायक –** जिन्होंने रिपोर्ट टाईप की।
- **अध्ययन से जुड़े समस्त बच्चे –** जिन्होंने हमें स्वीकार कर अपनी प्रगति का बारिकी से अवलोकन करने की इजाजत दी। जिससे हमारी सीखने–सीखाने की समझ गहरी हुई। इन्हीं बच्चों पर हमारा अध्ययन टिका हुआ था।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

- **अभिभावक –** हम सभी बच्चों के अभिभावकों व समुदायों के आभारी हैं जिन्होंने अपने जीवन के कुछ हिस्से हमारे साथ बाटें।
- **S.W.R.C तिलोनिया संस्था –** हम विशेष धन्यवाद देते है। जिन्होंने हमें रात्रिशालाओं में अध्ययन करने का मौका दिया।

पुखराज माली

फील्ड़ समन्वयक
ई.एल.पी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

विषय वस्तु :

विषय		पेज स.
1.	परिचय	5
2.	अध्ययन क्षेत्र का परिचय	5
3.	शोधकार्य के उद्देश्य	6
4.	शोधकार्य के बच्चों से परिचय	6
	4.1 मुकेश बागरिया	6
	4.2 सन्जू बागरिया	7
	4.3 अनिता प्रजापत	7
	4.4 किरण बलाई	7
	4.5 इन्द्रा मेघवंशी	8
5.	इन बच्चों को ही क्यों चुना ?	8
6.	अध्ययन की प्रक्रिया	9
7.	शिक्षण के तरीकों का संक्षिप्त वर्णन	9
8.	रिसर्च के बच्चों का वर्तमान पठन लेखन का स्तर	9
	8.1 मुकेश	9
	8.2 सन्जू	10
	8.3 अनिता, किरण, इन्द्रा	10
	8.4 रिसर्च के बच्चों के शिक्षण कार्य में प्रगति	11
9.	भाग 1 रिसर्च के बच्चों के शिक्षण कार्य की व्यक्तिगत रिपोर्ट	12
	9.1 अनिता प्रजापत	12
	9.2 किरण बलाई	16
	9.3 सन्जू बागरिया	19
	9.4 इन्द्रा मेघवंशी	21
	9.5 मुकेश बागरिया	25
10	भाग 2 केस स्टेड़ी	27
	10.1 अनिता प्रजापत	27
	10.2 इन्द्रा मेघवंशी	29
	10.3 किरण बलाई	31
	10.4 मुकेश बागरिया	32
	10.5 सन्जू बागरिया	34
11	भाग 3 अध्यापक साक्षात्कार	36
	11.1 अध्यापिका मुन्नी देवी	36
	11.2 अध्यापक हनुमान शर्मा	38
12	बड़े व छोटे बच्चों की तुलाना	40
	12.1 छोटे व बड़े बच्चों की माहवार तुलनात्मक रिपोर्ट	41
13.	निष्कर्ष	42
14	सीख	42
15	सुझाव	43

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कामकाजी छोटी आयु के बच्चों की शुरूआती पठन व लेखन की प्रक्रिया का अध्ययन

1. परिचय

इस शोध कार्य के पीछे हमारी सोच यह हैं कि जो बच्चे कभी शिक्षा से नहीं जुड़े हैं, उन बच्चों में शिक्षा के प्रति आत्म विश्वास कैसे जगाया जाए। वर्तमान समय को देखते हुए इन बच्चों का शिक्षित होना जरूरी है ताकि वे निर्भिक और निड़र होकर अपनी दिनचर्या पूरी कर सके। बच्चे शिक्षित होने से नवाचार करने का प्रयास करते है। वे नई जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक होते हैं । इस सब के लिए बच्चों का अक्षर ज्ञान और समझ से पढ़ना बहुत जरूरी हैं। हमने सोचा है कि इस शोध कार्य के पश्चात हम अपने प्रारम्भिक साक्षरता के प्रयास को और मज़बूती से कर पाएँगे।

इस शोध के द्वारा तुलनात्मक तरीके से दो आयु वर्ग के बच्चों की शुरूआती पठन–लेखन की क्रियाएँ और उनसे जुड़ी विशेषताओं को पहचानने का हमने प्रयास किया है। इसलिए यह दो शोध कार्य एक ही विषय को दो अलग दृष्टि से अध्ययन करने की एक कोशिश है। इसका यह भी फायदा रहेगा कि हम दोनो शोधकर्ता एक दूसरे से डिस्कस कर पाएँगे और इस तरह से शोधकार्य और विषय को और गहराई से समझ पाएँगे। इस शोघ से हम कामकाजी बच्चों की शुरूआती पठन लेखन की समझ विकसित करने की प्रक्रिया को करीबी से समझ पाएगे। साथ में हम उनकी समझ के साथ पढ़ने लिखने की प्रक्रिया में रुकावटों और सहयोगी तथ्यों को भी पहचानने की कोशिश करेगै। इस शोध कार्य की सीख को हम अपनी कक्षाओं में पढ़ाने के तौर–तरीकों में शामिल करना चाहेंगे।

2. अध्ययन क्षेत्र का परिचय

अजमेर जिले की पंचायत समिति सिलोरा तहसील किशनंगढ़ के राजस्व गाँव रामपुरा में संचालित रात्रिशाला में पढ़ने वाले बच्चों का अध्ययन किया गया। यह गाँव दूर दराज पिछड़े क्षेत्र में स्थित है । जहाँ आने–जाने के साधन नहीं हैं। यहाँ के लोगो का मुख्य धन्धा खेती–बाढ़ी और पशुपालन, है। कुछ लोग काम धन्धें के लिए किशनगढ़ जाते हैं। रामपुरा से पैदल हरमाड़ा पहुंचते हैं। फिर यहाँ से बस व टैक्सी में बैढ़कर किशनगढ़ कार्य पर जाते हैं। यह गाँव पंचायत मुख्यालय बुहारू से लगभग 10 किलोमीटर दूर स्थित हैं। रामपुरा गाँव के लोगों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है। यहां के लोग जैसे बागरिया जाति के लोग कमाने के लिए अपने बच्चों को साथ लेकर हरियाणा गेहूँ काटने के लिए दो से तीन माह के लिए जाते है।

3. शोधकार्य के उद्देश्य

- कामकाजी अनामांकित बच्चों को वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था से जोड़कर उनमें शुरूआती पठन व लेखन की समझ विकसित करने की प्रक्रिया को करीब से समझना।
- करीबी से छोटी उम्र के बच्चों में पढ़ने–लिखने की समझ व गति को समझना।
- उनकी समझ के साथ पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया में रूकावटों को करीबी से समझना इन रूकावटों को दूर करने का प्रयास करना और सहयोगी तथ्यों को पहचानना।
- उनमें पढ़ने–लिखने की जिज्ञासा को समझ कर सरल तरीकों का उपयोग करना ताकि उनकी शुरूआती पढ़न–लेखन की समझ विकसित हो सके।
- पढ़ने–लिखने व समझने में आने वाले सहयोगी तथ्यों को पहचानना।
- इस शोधकार्य की सीख को अपनी कक्षाओं में पढ़ाने के तौर–तरीकों में शामिल करना।

4 शोधकार्य के बच्चों से परिचय

4.1 मुकेश बागरिया – की उम्र लगभग 7 वर्ष है। मुकेश के पिता का नाम रामगोपाल है और उनकी जाति बागरिया है। वह रात्रिशाला रामपुरा में अगस्त 09 से कक्षा–1 में पढ़ रहा है । मुकेश के परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं हैं व परिवार में शैक्षणिक माहौल भी नहीं हैं। इसलिए मुकेश को दिनशाला में पढ़ने नहीं भेज सकते है । मुकेश चंचल स्वभाव का बच्चा हैं। वह एक जगह नहीं बैठता है। कक्षा–कक्ष में घूमता रहता है। हँसता रहता है। दोस्त जैसा व्यवहार करता है। मुकेश की बड़ी बहन पूजा भी कक्षा–1 में रात्रिशाला में पढ़ती है। उसकी एक छोटी बहन भी है। मुकेश के माँ–बाप मजदूरी करने किशनगढ के मार्बल एरिया में जाते हैं। मुकेश व पूजा दिन में घर पर रहते है और वे छोटी बहन को रखते हैं और घर की

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रखवाली करते है। मुकेश के दादा जी बकरियां चराते हैं। घर की आर्थिक स्थिति खराब हैं, और इस परिवार में बहुत गरीबी है। मुकेश के परिवार के पास 3 बीघा जमीन है, लेकिन उसको भी दादा जी ने गिरवी रख दिया है। इस वजह से मुकेश और पूजा को रात्रिशाला में पढ़ने भेजा गया ।

4.2 संजू बागरिया – की उम्र लगभग 7 वर्ष है । उसके पिता का नाम रामेश्वर है और उनकी जाति बागरिया है । सन्जू शान्त स्वभाव की है। उसकी एक बहन एवं तीन भाई है। उसका एक भाई शंकर प्राईवेट स्कूल में पढ़ता है और दूसरा भाई राकेश सरकारी स्कूल में पढ़ता है। उसकी बहन मन्जू रात्रिशाला में पढ़ती है। पवन सबसे छोटा है, जो अभी पढता़ नही है। सन्जू दिन में अपने छोटे भाई को रखती है एवं बकरियों की रखवाली करती है। मम्मी–पापा किशनगढ़ काम पर जाते हैं। सन्जू रात को रात्रिशाला रामपुरा में कक्षा–1 में पढ़ती हैं। पिता जी की आर्थिक स्थिति ठ़ीक नहीं होने के कारण दिनशाला में पढ़ने का माहौल नहीं मिला। सन्जू शुरू में बीमार होने के कारण शाला में अनियमित रहती थी लेकिन बाद में नियमित तरह से रात्रिशाला में पढ़ने आने लगी।

4.3 अनिता प्रजापत – की उम्र करीब 9 वर्ष है। उसके पिता का नाम हनुमान, और उनकी जाति कुम्हार है। वह रात्रिशाला रामपुरा में 7 बालक व 20 बालिकाएं के संग पढ़ती है। अनिता हँस–मुख स्वभाव की है। अनिता दिन मे भास्या (भैंस) चराती हैं और घर का काम करती हैं। शाम को वह घर का सारा काम करके रात्रिशाला में बस्ता उठाकर पढ़ने चली आती है। अनिता में पढ़ने–लिखने का जज्बा हैं। वह निसंकोच होकर रात्रिशाला में हँसती–खेलती अपनी सहेली इन्द्रा के साथ पढ़ने आती है। वह रात की स्कूल में कक्षा–1 में पढ़ती हैं।

4.4 किरण बलाई – की उम्र 8 वर्ष है। उसके पिता का नाम लालचंन्द्र है और उनकी जाति बलाई है। किरण रात्रिशाला रामपुरा में कक्षा 1 में पढ़ती है। किरण भाई–बहन में सबसे बड़ी है। छोटा भाई सूरज दिन की बालवाड़ी में जाता हैं। छोटी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बहन दिनशाला में पढ़ती है। कभी जाती है। कभी नहीं जाती है। किरण के पापा कक्षा 8वीं फेल है। वह ढ़ोलक बजाने और, भजनों में माईक लगाने का काम करते हैं। उसके पिताजी ने दिनशाला में उसे नहीं पढ़ाया क्योंकि बकरियां चराने वाला कोई नहीं है । अब किरण दिन में बकरियां चराती है और अपनी सहेलियां के साथ खेलती है। वह थक जाती है लेकिन फिर भी उसमें पढ़ने की ललक है।

4.5 इन्द्रा मेघवंशी – इन्द्रा कक्षा 1 में पढ़ती है। उसकी उम्र 8 वर्ष है। उसके पिता का नाम नन्दलाल है और उनकी जाति बलाई है। दिन में इन्द्रा ड़ांड़ा (जानवर) चराने का काम करती है और शाम को वह रात्रिशाला में पढ़ने आती है। इन्द्रा रात्रिशाला की कक्षा 1 में अगस्त 09 से पढ़ने आने लगी। इन्द्रा को घर में पढ़ने का माहौल नहीं मिला है। घर की स्थिति ठीक नहीं है, घर में गरीबी है। ड़ांड़ा चराने वाला कोई नहीं है। एक भाई है जो कक्षा 8 में पढ़ता है। छोटी बहन बालवाड़ी में पढ़ती है। भाई इन्द्रा के साथ ड़ांड़ा चराने जाता है। इन्द्रा को शुरू में कुछ भी नहीं आता था और शुरू में वह पाटी–बड़ता, पेन–पेंन्सिल भी पकड़ना नहीं जानती थी। शर्म के मारे वह कक्षा में चुपचाप ही बैठी रहती थी। बच्चों को रोज कविता व खेल खिलाएं जाते थे। कक्षा में. कहानी भी सुनाई जाती है जिससे धीरे धीरे इन्द्रा इनमें जुड़ने लगी।

5. इन बच्चों को चुनने का आधार –

- छोटी आयु के बच्चे जिनकी उम्र 5 से 9 वर्ष तक है।
- गरीब तपके के बच्चे ।
- जो बच्चे दिन में नहीं पढ़ पाते हैं ।
- घर में शैक्षणिक माहौल नहीं हैं।
- कामकाजी बच्चे है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

6. अध्ययन की प्रक्रिया

1. शुरूआती मूल्यांकन
2. हर बच्चों का कक्षा के भीतर सप्ताह में एक बार अवलोकन करके ड़ायरी में लिखना।
3. समय–समय पर लिखित कार्य या वर्कशीट
4. 6 महीने के दौरान अवलोकन के नोट्स व बच्चों के कार्य को सामने रखकर हर बच्चे की विस्तृत प्रगति रिपोर्ट लिखकर, हर बच्चे की प्रगति का निष्कर्ष निकालना
5. प्रत्येक बच्चे के घर जाकर उनके अभिभावकों से सम्पर्क करना और उनकी कैस स्टड़ी लिखना
6. टीचर्स के साथ साक्षात्कार
7. दोनों आयु वर्ग के बच्चों की पठन/लेखन प्रक्रिया की तुलना करना।

7. शिक्षण के तरीकों का संक्षिप्त वर्णन–

कक्षा 1 में वर्ण समूह विधि से हिन्दी पढ़ने–लिखने का कार्य शुरू किया गया। इस विधि के तहत हिन्दी वर्णमाला को 6 समूहों मे बाँटा गया है। प्रत्येक वर्ण समूह में कुछ चयनित स्वर, व्यंजन और मात्राओं को लिया जाता है। बच्चों को इन वर्ण समूहों से एक–एक करके क्रमबद्ध तरीकों से परिचित कराया जाता है। प्रत्येक वर्ण समूह के वर्ण, अक्षर और मात्राओं से बच्चों को एक साथ में ही, कई गतिविधियो द्वारा परिचित कराया जाता है, ताकि शुरू से ही बच्चे वर्ण और अक्षरों को अर्थपूर्ण शब्दों के हिस्सों की तरह देखे। जल्द ही बच्चे वर्ण समूह में शमिल अक्षरों की ध्वनियाँ को अपने मन से जोड़कर अपने मौखिक शब्दों के लिए लिखित शब्द बनाना सीख लेते हैं। फिर वे अपने हर लिखित शब्द का अर्थ चित्र बनाकर दर्शाते हैं। बच्चों को शब्द जोड़कर वाक्य बनाना और कविता का पठन और लेखन भी सिखाया जाता है।

8 रिसर्च के बच्चों का वर्तमान में पठन–लेखन का स्तर

8.1 मुकेश : स्लेट पर झूक कर क, प, म, ल, न, लिखता है। मुकेश में क, प, म, ल, न, के बुनियादी मोड़ की पकड़ है। वर्णो की ध्वनि की पहचान नहीं हैं। जैसे वह

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कभी क को प पढ़ता हैं । ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान कभी करता है और कभी भूल जाता है। मुकेश क, प, म, ल, न, वर्ण से आगे नहीं बढ़ पाया अर्थात बाकी वर्णो की पहचान उसे नहीं है। आगे बढ़ने हेतु अक्षर दौड़, फ्लैश कार्ड़ द्वारा अक्षर की पहचान का अभ्यास करवाया जा रहा है, ताकि उसे चिन्ह व ध्वनि के माध्यम से वर्णो की पहचान हो पाएं।

8.2 सन्जू : सन्जू वर्ण समूह–1 के वर्णों के चिन्ह व ध्वनि की पहचान समझ से कर लेती है। वह नवम्बर से दिसम्बर तक 'पानी–झरा' होने के कारण अनियमित रही। इसके कारण शब्द निर्माण की उसकी समझ अभी पक्की नहीं हुई और उसका शब्द निर्माण का अभ्यास जारी है।

8.3 अनिता, किरण, इन्द्रा : वर्ण/अक्षर व ध्वनि की पहचान और ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान समझ से कर लेती है। वे दो ध्वनियों को जोड़कर, अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण कर लेती है। शब्द के अर्थ को दर्शाने के लिए चित्र बना लेती है। कविता का उच्चारण पठ़न और शब्दों की पहचान व फ्लैश कार्ड़ द्वारा कविता के वाक्य का निर्माण भी कर लेती है। छोटे–छोटे वाक्यों का श्रुतलेख लिख लेती है। उदाहरणः नानी आम लाई। कमला नल का पानी लाई। मामी काली माला लाई। नानी, आम, माला, जैसे शब्द बनाकर फिर उनके चित्र भी बना लेती हैं। वाक्यों का पठन धारा प्रवाह से कर लेती है। इससे यह साबित होता है कि इनके पठन व लेखन से अब उसका सम्बन्ध हो गया हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उसने एक कदम आगे बढ़ा लिया हैं। अनिता, किरण इन्द्रा, में पठन व लेखन की पकड़ हैं। हाल ही में उन्हें वर्ण समूह दो के वर्णो का अभ्यास करवाया जा रहा हैं, और ध्वनि व चिन्ह की पहचान करवाई जा रही हैं। किरण, अनिता, इन्द्रा वर्ण समूह–2 में ध्वनि व चिन्ह की पहचान कर लेती है। शब्दों की प्रथम ध्वनि और चिन्ह् पहचानने के लिए इन बच्चों को वर्कशीट दी गयी। जिसमें शब्द बोले गये जैसे – चरी, रकम, सड़क, तगारी, गली। बच्चों को शब्द की प्रथम ध्वनि व चिन्ह की पहचान करके प्रथम अक्षर पर गोला लगाना था बच्चों ने प्रथम ध्वनि पर गोला लगाया, गोला लगाये गए वर्ण को लिखा। अनिता, किरण, इन्द्रा, इस प्रक्रिया को समझ से कर लेती है। अभी वर्तमान में वर्ण समूह दो वर्णो व अक्षरों के चिन्ह व ध्वनि की पहचान कराने अभ्यास कार्य चल रहा है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

8.4 रिसर्च के बच्चों के शिक्षण कार्य में प्रगति

बच्चे का नाम	बच्चों के शिक्षण कार्य की प्रगति अक्टूबर 2009 से मार्च 2010 तक			
	माह अक्टूबर 2009	माह नवम्बर से जनवरी	माह फरवरी	माह मार्च 2010
मुकेश	वर्ण/अक्षर की पहचान नहीं, क भी लिखना नहीं आता था।	क, प, म, का बुनियादी मोड़, क, प, म, की पहचान,	वर्ण समूह–1 के वर्णो का बुनियादी मोड़ सीख पाया परन्तु वह कुछ वर्णो को भूल जाता हैं	ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान, तथा श्रुतलेख कराने पर समझ के साथ लिख लेता हैं।
सन्जू	अक्षर चार्ट के वर्ण समूह–1 के बुनियादी मोड़ तो आते है परन्तु चिन्ह की पहचान नहीं हैं।	अक्षर चार्ट के वर्णो व अक्षरों का ध्वनि के साथ पहचान कर लिख लेती हैं। परन्तु कभी भूल जाती हैं।	वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट के वर्णो व अक्षरों का ध्वनि के साथ पहचान कर लिख लेती हैं। पास–पास की ध्वनि को जोड़कर अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण कर चित्र बना लेती हैं।	वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण करना प्रारंम्भ किया। बोले गए शब्दों को लिखना व पढ़ना आ गया।
अनिता,	वर्ण समूह–1 के कुछ वर्णो की पहचान परन्तु वर्ण की बुनियादी मोड़ नहीं लिख पाती,	वर्ण समूह–1 के वर्ण/अक्षर की पहचान कर लेती हैं। शब्द की शुरूआती ध्वनि की पहचान बनी, वर्ण/अक्षरों का श्रुतलेख समझ आत्म–विश्वास से लिख लेती हैं	वर्ण समूह–1 के अक्षरों को मिलाकर अर्थपूर्ण शब्द बना लेती है तथा चित्र भी बना लेती हैं। शब्द को ईकाई की तरह पढ़ती हैं। फ्लैश कार्ड द्वारा वाक्य का निर्माण व पठन–लेखन भी कर लेती हैं।	अक्षर चार्ट से अक्षरो को मिलाकर शब्द निर्माण कर लेती है। वर्ण समूह–1 की कविताओं का पठन व लेखन कर लेती हैं तथा वाक्य भी लिख लेती हैं। वर्ण समूह–2 के वर्णो व अक्षरों की पहचान कर लेती है व वर्ण समूह–1 व 2 से बने हुए शब्द दीवार से शब्द पढ़ लेती हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

किरण	वर्ण समूह–1 के कुछ वर्णो का पठन व लेखन कर लेती थी। कुछ वर्णो का लेखन उल्टा करती थी। बोले गए वर्णो को लिख नहीं पाती थी।	वर्ण समूह–1 के वर्णो व अक्षरों का पठन व लेखन समझ से कर लेती हैं अक्षर चार्ट से दो ध्वनि को मिलाकर शब्दों का निर्माण और चित्र भी बनाने लगी हैं	वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट से शब्दों का निर्माण करने लगी व कविता का पठन व लेखन करने लगी, फ्लैश कार्ड़ से वाक्यों का निर्माण करने लगी, वाक्य का पठन धारा प्रवाह से कर लेती हैं।	वर्ण समूह–1 के शब्दों का निर्माण, कविता का पठन व लेखन में आत्म–निर्भर होने के पश्चात वर्ण समूह–2 के वर्णो व अक्षरों की पहचान तथा पठन व लेखन भी समझ से कर लेती है। वर्ण समूह–1 व 2 के शब्दों को शब्द दीवार से धारा प्रवाह से पढ़ लेती हैं।
इन्द्रा	वर्ण समूह–1 के वर्णो को लिख लेती थी। परन्तु ध्वनि व चिन्ह की पहचान नहीं थी।	वर्ण समूह–1 के वर्णो व अक्षरों की ध्वनि व चिन्ह की पहचान करने लगी और पास–पास के अक्षरों की ध्वनियों जोड़कर शब्द बनते है यह समझ बनी	वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट से बनने वाले शब्दों का निर्माण करने लगी तथा कविताओं का उच्चारण करने लगी व छोटे–छोटे वाक्यों का निर्माण फ्लैश कार्ड़ द्वारा करने लगी	वर्ण समूह–1 की कविता का पठन धारा प्रवाह से कर लेती हैं व बिना देखे लेखन भी कर लेती हैं। वर्ण समूह–2 के वर्णो व अक्षरों का ज्ञान समझ से करने लगी व शब्दों का श्रुतलेख लिख लेती हैं।

भाग 1

9. रिसर्च के बच्चों के शिक्षण कार्य की व्यक्तिगत प्रगति रिपोर्ट

9.1 अनिता प्रजापत के शिक्षण कार्य की माह अक्टूबर से माह मार्च में प्रगति

माह अक्टूबर 2009

- अध्ययन शुरू करने हेतु अनिता में पढ़ने लिखने की समझ को परखने के लिए शुरूआती मूल्यांकन लिया गया। जिसमें अनिता ने अपनी कल्पना से अपनी दुनिया से जुड़े हुए चित्र बनाएं जैसे कागला, फूल, छोरा, पत्ता। उसे वर्ण अक्षर का श्रुतलेख भी लिखवाया गया। ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान हेतु शब्द

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बोले गये। वर्ण समूह–1 के वर्णो की ध्वनि व अक्षर की प्रथम ध्वनि पर गोला लगाना व गोला लगाये गए वर्ण/अक्षर को लिखना।

- अनिता को वर्ण/अक्षर के श्रुतलेख लिखने की समझ तो थी परन्तु ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान की समझ नहीं थी।
- वर्ण क, प, ल, पर शब्द सुनकर गोला तो लगाया लेकिन समझ से लिख नहीं पाई। अनिता क को प पढ़ती हैं। उसकी इस समस्यां को दूर करने हेतु क, प, म, ल, न वर्ण के बुनियादी मोड़ का अभ्यास उसके साथ शुरू किया गया। बोर्ड़ पर कविता द्वारा हवा में वर्ण पर अंगूली घूमाना व जमीन पर क, प, म, ल, न के बुनियादी मोड़ का अभ्यास करवाया गया।
- प्रथम ध्वनि की पहचान हेतु क, प, म, ल, न से शुरू होने वाली चीजों के नाम पूछे गये। जो घर मे होती है। अनिता ने क से शुरू होने वाले शब्द बतलाए – केलड़ी, कागलों, काचरों, म से शुरू होने शब्द बतलाए – मतीरों, मटकों,, लालटेन, प से परीण्ड़ों पतंग, और न से नल, नाड़ो,। गतिविधि द्वारा भी प्रथम ध्वनि की पहचान करवाई गई। जैसे रेल–रेल–रेल..... बोर्ड़ पर रेल बनाई गई। अनिता के पेपर पर रेल बनाई गई और क, प, म, ल, न से शुरू होने वाले शब्दों के चित्र रेल में बनाए गए। कणकती, काचरों, काकड़ी, पीपों, पापा, पलग, पपीतों,
- चित्र पढ़न करवाया गया।

माह नवम्बर 2009 से जनवरी 2010

- वर्ण समूह–1 के वर्णो व अक्षरों की ध्वनि व चिन्ह की पहचान। वर्ण/अक्षर शब्दों के श्रुतलेख का अभ्यास जारी रखा गया।
- प्रथम ध्वनि की पहचान करवाकर अक्षर चार्ट में चिन्ह की पहचान करवाई गई। अनिता ध्वनि व चिन्ह में तालमेल समझ से कर लेती हैं।
- फ्लैश कार्ड़ में चिन्ह की पहचान कर लेती हैं।
- अ, आ, ई का बुनियादी मोड़ का अभ्यास करवाया गया। अनिता ने अ, आ, ई का बुनियादी मोड़ जल्दी से सीख लिया।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

- एक माह बाद क, प, म, ल, न, अ, आ, ई, का श्रुतलेख समझ से लिखने लगी।
- गतिविधि द्वारा वर्ण/अक्षर की पहचान कर लेती है।
- अक्षर चार्ट का एक्शन, हावभाव के साथ उच्चारण पढ़न समझ से कर लेती है।
- अक्षर चार्ट से दो ध्वनियों को जोड़ना अर्थपूर्ण शब्दो का निर्माण करना एवं निर्माण किये गए शब्द का चित्र भी समझ से बना लेती है।
- फ्लैश कार्ड़ द्वारा पास के अक्षर को जोड़कर शब्द निर्माण कर अक्षर चार्ट में चिन्ह की पहचान कर लेती हैं।
- शब्द को ईकाई की तरह पढ़ती है। शब्द को तोड़कर नहीं पढ़ती है।

माह फरवरी 2010

- शुरू में अक्षर चार्ट से शब्द खोज का अभ्यास करवाया गया।
- शब्द खोज कर, उन्हें लिखा, जैसे नल, नानी, मामी, कील, कान, नाक काना, और फिर उनके चित्र भी बनाएं।
- शब्द सुनकर उसके लिखित रूप पर गोला लगाने का अभ्यास करवाया गया। अनिता समझ से शब्द सुनकर गोला लगाकर लिखने लगी।
- वह वर्ण/अक्षर के श्रुतलेख लिखने लगी।
- शब्द पहचान कर जोड़ियों को लाईन खींचकर जोड़ने की वर्कशीट भी सही कर पाई। अनिता ने समझ से नाना, नानी, काका, काकी, को लाईन खींचकर जोड़ देती है।
- अनिता छोटे–छोटे वाक्य का निर्माण भी कर लेती है एवं वाक्य का श्रुतलेख लिख लेती है। जैसे लाली नल का पानी लाई। मामी काली माला लाई।

माह मार्च 2010

- शुरू में शब्द खोज की वर्कशीट ली गयी।
- अनिता ने अक्षर चार्ट में से अपने शब्द खोजे जैसे, काकी, नानी, पानी, कील, नीली, लीला, काका, नीला, लाला, लाली, काली, साथ में उनके चित्र भी बनाएं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

- वाक्य का श्रुतलेख भी लिखा। जैस, नानी पपीता लाई।
- शब्दों का श्रुतलेख भी लिख लेती है। नीपना, मकान, मामा, इनके चित्र भी समझ से बना लेती है।
- अनिता वर्ण/अक्षर की पहचान शब्द निर्माण कविता का उच्चारण पढ़न् शब्दों की पहचान कर लेती है। शब्द ताली द्वारा शब्दों की पहचान एवं अक्षर की व ध्वनि की पहचान समझ से कर लेती है।
- वह फ्लैश कार्ड़ द्वारा कविता के वाक्य का निर्माण कर लेती है। जैस, नानी आम लाई। कमला नल का पानी लाई। मामी काली माला लाई। वाक्यों का पठन घारा प्रवाह से कर लेती है।
- कविता माला लाना माला लाना..... का उच्चारण पढ़न समझ से कर लेती है। फ्लैश कार्ड़ द्वारा कविता के शब्दों का निर्माण एवं कविता के शब्दों के अक्षर की पहचान अक्षर चार्ट में समझ से कर लेती है।

माह अक्टूबर से मार्च की संक्षिप्त मे अनिता की प्रगति

	माह अक्टूबर 2009	माह नवम्बर से जनवरी	माह फरवरी	माह मार्च 2010
अनिता,	वर्ण समूह–1 के कुछ वर्णो की पहचान वर्ण की बुनियादी मोड़ नहीं लिख पाती,	वर्ण समूह–1 के वर्ण/अक्षर की पहचान कर लेती हैं। शब्द की शुरूआती ध्वनि की पहचान बनी, वर्ण/अक्षरों का श्रुतलेख लिख लेती हैं	वर्ण समूह–1 के अक्षरों को मिलाकर अर्थपूर्ण शब्द बना लेती है तथा उनका चित्र भी बना लेती हैं। शब्द को ईकाई की तरह पढ़ती हैं। फ्लैश कार्ड़ द्वारा वाक्य का निर्माण व पठन–लेखन भी कर लेती हैं।	अक्षर चार्ट से अक्षरो को मिलाकर शब्द निर्माण कर लेती है। वर्ण समूह–1 की कविताओं का पठन व लेखन कर लेती हैं तथा वाक्य भी लिख लेती हैं। वर्ण समूह–2 के वर्णो व अक्षरों की पहचान कर लेती है व वर्ण समूह–1 व 2 से बने हुए शब्द दीवार से शब्द पढ़ लेती हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

9.2 किरण बलाई के शिक्षण कार्य की माह अक्टूबर से माह मार्च में प्रगति

माह अक्टूबर 2009

- अध्ययन शुरू किया गया। किरण में पढ़ने लिखने की समझ देखने हेतु शुरूआती मूल्यांकन लिया गया। किरण ने चित्र बनाये। छोरा का चित्र बनाया। फूल, काचरा, काकड़ी के चित्र बनाये। चित्र का नाम पूछा गया तो नाम तो बता देती है परन्तु प्रथम ध्वनि व प्रथम अक्षर की पहचान नहीं कर पाई।
- श्रुतलेख लिखवाया गया। क, न, प, म, आ, ई, ल श्रुतलेख लिखती है परन्तु लिखने का प्रवाह उल्टा था। वर्ण/अक्षर को पढ़ नहीं पाती हैं।
- ध्वनि व चिन्ह की पहचान हेतु शब्द बोले गये कमल, पानी, प्रथम ध्वनि पहचान कर गोला लगाना व लिखना क व प पर गोला लगा लेती है। लिख लेती है। परन्तु अन्य शब्द आम, लाली, की प्रथम ध्वनि पहचान कर सही चिन्ह पर गोला नहीं लगा सकी।
- लिखने के लिए सबसे पहले क, प, म, ल, न वर्ण के बुनियादी मोड़ का अभ्यास करवाया गया। बच्चों से वर्ण पर अंगूली घूमाने को कहा गया ताकि बच्चे को वर्ण की आकृति का अभ्यास हो सके। जमीन पर वर्ण लिखकर, किरण का क, प, म, ल, न के बुनियादी मोड़ का अभ्यास पक्का हो गया।
- वर्ण समूह–1 के वर्णो की ध्वनि की पहचान हेतु क, प, म, ल, न से शुरू होने वाले शब्द पूछे गये। जैसे, काका, काकी, काकड़ी, कतणी, पानी, पापी, पलगं, मटका, माला, लाली, लकड़ी, नल, नथ प्रथम ध्वनि की पहचान करवाई गई। किरण ने क, प, म, ल, न की रेल में इन वर्ण से शुरू होने वाले चित्र बनाए। चित्र पढ़न करवाया गया।
- किरण प्रथम ध्वनि व चिन्ह की पहचान कर लेती है। बोर्ड़ पर रेल बनाई गई।
- अक्षर चार्ट में चिन्ह की पहचान की गई।

माह नवम्बर 2009

- ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान हेतु, वर्कशीट दी गई। जिसमें किरण ने ध्वनि द्वारा प्रथम अक्षर की पहचान कर के उस पर गोला लगाया।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

- क, प, म, ल, न का श्रुतलेख लिखवाया गया। किरण ने समझ के साथ श्रुतलेख को लिखा और समझ से श्रुतलेख को पढ़ भी लेती है। गतिविधि द्वारा अक्षर चार्ट व फ्लैश कार्ड़ पर वर्णो की पहचान करवाई गई।
- शुरू में तो वर्ण को लिखने में किरण को कठिनाई होती थी। किरण को हाथ पकड़कर वर्ण लिखने का अभ्यास करवाया गया। अब किरण खुद वर्ण का श्रुतलेख लिख लेती है। इसके बाद अ, आ, ई के बुनियादी मोड़ का अभ्यास करवाया गया। –इसके बाद अक्षर चार्ट का अभ्यास एक्शन के साथ करवाया गया। गतिविधि द्वारा अक्षर चार्ट में वर्ण/अक्षर की पहचान करवाई गई एवं फ्लैश कार्ड़ पर वर्ण अक्षर की पहचान करवाई गई। शुरू में किरण ध्वनि में अन्तर नहीं पहचान पाई। ध्वनि में अन्तर समझाया गया। आज किरण ध्वनि में अन्तर समझ के साथ पहचान लेती है। अब किरण ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान समझ के साथ कर लेती है।
- दो ध्वनियों को जोड़ने का अभ्यास शुरू किया गया। अक्षर चार्ट में से पास–पास की ध्वनियों को जोड़कर अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण शुरू में किरण नहीं कर पाई। वह उन्हे अलग–अलग बोलती थी, एक साथ नहीं। इस के लिए शब्द ताली द्वारा ध्वनियों को जोड़ने का अभ्यास करवाया गया। अब किरण के समझ में आ गया और वह अर्थपूर्ण शब्दों का निर्माण करने लगी जैसे काकी, नानी, लाली, व इनके चित्र भी बना लेती है। रंगों के नामों का निर्माण समझ के साथ कर लेती है जैसे काला, पीला, नीला, लाल।

दिसम्बर 2009 से जनवरी 2010

- शब्द दीवार से जुड़ी गतिविधि द्वारा शब्दों की पहचान और अक्षर चार्ट व फ्लैश कार्ड़ में अक्षर की पहचान कर लेती है।
- बोर्ड़ पर शब्द लिखकर चित्र बना देती है।
- ध्वनि एवं चिन्ह की पहचान व वर्ण/अक्षर शब्दों का श्रुतलेख वर्कशीट में लिया गया। इसमें दो महीने का समय लगा। उसके बाद किरण को शब्द सुनकर शब्द पर गोला लगाना एवं लिखने का अभ्यास करवाया गया। अब किरण में पढ़ने की हिम्मत बढ़ गई। समझ के साथ शब्द सुनकर शब्द पर गोला लगा देती है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

- अक्षर चार्ट से दो अक्षर व तीन अक्षर के शब्दों का निर्माण भी कर लेती है जैसे नमक, कप, नानी लीला, मकान, के चित्र भी बना लेती है।
- शब्दों की पहचान हेतु शब्द जोड़ियों का भी अभ्यास करवाया गया। किरण शब्द जोड़ियों को समझ के साथ लाईन खींचकर जोड़ देती है। हर माह ध्वनि व चिन्ह की पहचान व वर्ण/अक्षर/शब्दों के श्रुतलेख की वर्कशीट ली जाती है।

माह फरवरी से मार्च 2010

- किरण छोटे वाक्य का निर्माण करने लगी। जैसे नानी नल का पानी लाई। मामी नल का पानी लाई।
- वाक्य का श्रुतलेख भी लिख लेती है।
- अक्षर चार्ट में समझ के साथ वाक्य के शब्द और उनके अक्षरों की पहचान कर लेती है।
- वाक्य को धारा प्रवाह से पढ़ लेती है।
- कविता का पठन, उच्चारण समझ से कर लेती है। कविता का पठन धारा प्रवाह से कर लेती है।
- कविता के वाक्यों व शब्दों का श्रुतलेख समझ से लिख लेती है।

माह अक्टूबर से मार्च की प्रगति संक्षिप्त में

	माह अक्टूबर 2009	**माह नवम्बर से जनवरी**	**माह फरवरी**	**माह मार्च 2010**
किरण	वर्ण समूह–1 के कुछ वर्णो का पठन व लेखन। कुछ वर्णो का लेखन उल्टा करती थी। बोले गए वर्णो को लिख नहीं पाती थी।	वर्ण समूह–1 के वर्णो व अक्षरों का समझ से पठन व लेखन। अक्षर चार्ट से दो ध्वनि को मिलाकर शब्दों का निर्माण। शब्दो के अर्थ के लिए चित्र।	वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट से शब्दों का निर्माण। कविता का पठन व लेखन । फ्लैश कार्ड़ से वाक्यों का निर्माण वाक्य का पठन धारा प्रवाह से।	वर्ण समूह–1 के शब्दों का निर्माण, कविता का पठन व लेखन वर्ण समूह–2 के वर्णो व अक्षरों की पहचान तथा पठन व लेखन। वर्ण समूह–1 व 2 के शब्दों को शब्द दीवार से पढ़ लेती हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

9.3 सन्जू के शिक्षण कार्य की माह अक्टूबर से माह मार्च में प्रगति

माह अक्टूबर 2009

- अध्ययन शुरू करने से पहले सन्जू में पढ़ने लिखने की समझ जानने के लिए उसका शुरूआती मूल्यांकन जिसमें श्रुतलेख व चित्र बनाने के लिए एक वर्कशीट दी गई। सन्जू ने अपनी कल्पना से चित्रों को चित्रित किया व उनके नाम भी बताएं।
- श्रुतलेख में उसने ई, को इ लिखा। मूल्यांकन के दौरान ध्वनि की पहचान हेतु शब्द बोले गए और सन्जू ने उनकी प्रथम ध्वनि वाले वर्ण पर गोला लगाया और फिर उन्हें लिखा। सन्जू क, प, न पर गोला लगाकर लिख पाई ल पर गोला नहीं लगा पाई, लेकिन उसने ल को लिख दिया। शुरूआती मूल्यांकन से सन्जू की पठन व लेखन का स्तर पता चला।
- वर्ण समूह–1 के वर्णो का बुनियादी मोड़ का अभ्यास बोर्ड़ पर हवा में अंगूली घूमा कर और जमीन पर कविता द्वारा करवाया गया। ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान हेतु क, प, म, ल, न से शुरू होने वाले नाम पूछे गये। सन्जू में ध्वनि व चिन्ह की पकड़ पक्की नहीं थी। क, को प समझकर पढ़ती थी। बोर्ड़ पर रेल बनाई गई। सन्जू ने पेपर पर रेल बनाई। उनमें क, प से शुरू होने वाले शब्दों के चित्र बनाये। काका, काकी, काचरा, काकड़ी, पाटी, पापी, पलगं, गतिविधि द्वारा ध्वनि व चिन्ह की पहचान करवाई गई। सन्जू धीरे–धीरे ध्वनि व चिन्ह की पहचान करने लगी।

माह नवम्बर 2009

- माह नवम्बर में सन्जू को बुखार आ गया। 'पानी–झरा' रोग की शिकायत हो गई। सन्जू स्कूल नवम्बर माह में नहीं आ पाई।

माह दिसम्बर 2009

- दिसम्बर माह में सन्जू अपने नानी के जाने के कारण अनियमित रही।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

माह जनवरी 2010

- अक्षर चार्ट 1 के वर्णो का दोहरान कराया गया। सन्जू अनियमितता के कारण ध्वनि और चिन्ह की पकड़ नहीं कर पा रही थी। उसके साथ पुनः अक्षर चार्ट के वर्णो का एक्शन एव हावभाव के साथ पठन, उच्चारण का अभ्यास करवाया गया। गतिविधि द्वारा अक्षर चार्ट व फ्लैश कार्ड़ से ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान करवाई गई। अक्षर दौड़ का अभ्यास करवाया गया। ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान मजबूत करने हेतु माह जनवरी में वर्कशीट ली गयी। न की ध्वनि की पहचान कर चिन्ह पर गोला लगा लेती है। परन्तु न को त लिखती हैं। श्रुतलेख में भी न को त लिखती है। अ, आ, ई का श्रुतलेख लिख पाती है। ध्वनि और चिन्ह की पहचान हेतु जनवरी में दो वर्कशीट और ली गयी। जिसमें सन्जू वर्ण समूह–1 के वर्णो व अक्षरों की पहचान पक्की नहीं हैं

माह फरवरी से मार्च 2010 तक

- वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट के वर्णो व अक्षरों को ध्वनि के साथ पहचान कर लिख लेती हैं। पास–पास की ध्वनि को जोड़कर अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण कर चित्र बना लेती हैं।
- वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण करना प्रारंम्भ किया। बोले गए शब्दों को लिखना व पढ़ना आ गया। सन्जू दो ही अक्षरों के शब्द का निर्माण कर पाती हैं।

माह अक्टूबर से मार्च की प्रगति संक्षिप्त में

	माह अक्टूबर 2009	माह नवम्बर से जनवरी	माह फरवरी	माह मार्च 2010
सन्जू	अक्षर चार्ट के वर्ण समूह–1 के बुनियादी मोड़ तो आते है परन्तु चिन्ह की पहचान नहीं हैं।	अक्षर चार्ट के वर्णो व अक्षरों का ध्वनि के साथ पहचान कर लिख लेती हैं। परन्तु कभी भूल जाती हैं।	वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट के वर्णो व अक्षरों को ध्वनि के साथ पहचान कर लिख लेती हैं। पास–पास की ध्वनि को जोड़कर अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण कर चित्र बना लेती हैं।	वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण करना प्रारंम्भ किया। बोले गए शब्दों को लिखना व पढ़ना आ गया।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

9.4 इन्द्रा मेघवंशी के शिक्षण कार्य की माह अक्टूबर से माह मार्च में प्रगति

माह अक्टूबर 2009

- अध्ययन शुरू किया गया। धीरे–धीरे इन्द्रा की शर्म दूर होने लगी। फिर समझ में आने लगा कि अब उसकी पढ़ने–लिखने में आने वाली समस्यां को समझा जा सकता है। इसके लिए सबसे पहले जमीन पर रेत में अंगूली से चित्र बनाने का अभ्यास करवाया गया। इन्द्रा ने जमीन पर अंगूली से केलड़ी, फूल, का चित्र बनाया। जब वह समझ से चित्र बनाने लगी तब पेपर पर पेन्सिल से मन से चित्र बनाने शुरू किए। उसने अलग अलग चित्र बनाए, जैसे, सांप, फूल, केलड़ी । इन्द्रा से चित्रों के नाम पूछे गए तो उसने बताया कि, फूल और केलड़ी का चित्र है।
- अब बच्चों के परिवेश से जुड़ी हुई गतिविधि करवाई गई। इसके लिए क, प, म, ल, न वर्णो का चयन किया गया। सबसे पहले क, प, म, ल, न के बुनियादी मोड़ से परिचित करवाया गया। बोर्ड़ पर लिखना और अंगूली से मिटाना, हवा में लिखना, पानी से लिखना, कविता बोल कर लिखना, जैसे, माड़ बेटा आड़ी लकीर, खड़ी लकीर, बाये हाथ का चुल्हा, दाये हाथ का चुल्हा। इसी प्रकार प, म, ल, न के बुनियादी मोड़ से बच्चों को परिचित करवाया गया। बुनियादी मोड़ बनाने में इन्द्रा को मजा आता था। इन्द्रा बुनियादी मोड़ से परिचित हो गई।
- बुनियादी मोड़ से परिचित करवाने के बाद फ्लैश कार्ड़ व अक्षर चार्ट में गतिविधि द्वारा वर्ण की पहचान करवाई गइ।
- इसके बाद क, प, म, ल, न से शुरू होने वाले नाम इन्द्रा से पूछे गये। इन्द्रा ने अपने परिवेश से जुड़े शब्द बतलाए, जैसे, केलड़ी, काचरा, काकड़ी, पानी, पालो, मटकी, माला, लट्टू, लकड़ी, नल, नानी।
- इन शब्दों की ध्वनि की पहचान करवाई गई। रेल बनाई गई।
- रेल में इन्द्रा ने उस रेल के वर्ण से जुड़ी चीज़ों, जैसे, क से केलड़ी, काचरा, म से मटकी, माला, ल से लट्टू, लकड़ी और न से नल, नानी आदि के चित्र बनाये।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

- ध्वनि की पहचान मजबूत करने हेतु इन्द्रा से नाम पूछे गए। काकी, काका, मामी, नानी, लाली, इन्द्रा सोच समझकर प्रथम ध्वनि की पहचान कर अक्षर चार्ट में चिन्ह की पहचान करने की कोशिश करने लगी। शुरू में क की पहचान प के रूप में की उसके बाद धीरे–धीरे सही ध्वनि व चिन्ह की पहचान करने लगी। ध्वनि व चिन्ह की पहचान मजबूत करने हेतु फ्लैश कार्ड़ व अक्षर चार्ट पर अक्षर दौड़ (वर्ण दौड़) का अभ्यास करवाया गया। इसमे कम से कम 1 महीने का समय लगा। ढ़ोस सामग्री द्वारा भी ध्वनि व चिन्ह की पहचान करवाई गई।
- क, प, म, ल, न का श्रुतलेख लिखवाया गया । इन्द्रा ने श्रुतलेख सही लिखा। श्रुतलेख में से ही क, प, म, ल, न की पहचान करवाई गई।
- इसके बाद अ, आ, ई के बुनियादी मोड़ से परिचित करवाया गया। इन्द्रा का मन पढ़ाई करने में लग गया। रोज स्कूल आने लगी।
- अक्षर चार्ट का अभ्यास करवाया गया। अक्षर चार्ट में परिवेश से जुड़े हुए अक्षर ही लिए गए। अक्षर चार्ट का अभ्यास एक्शन द्वारा क्रम बदलकर ऊपर से नीचे प्रतिदिन 5 मीनट करवाया जाता था।
- गतिविधि द्वारा अक्षर चार्ट व फ्लैश कार्ड़ में वर्ण व अक्षर की पहचान का अभ्यास करवाया गया। शुरू में इन्द्रा का को प पढ़ती थी। ला को ल पढ़ती थी। मा को मी पढ़ती थी। इसके लिए क, प, पा, पी, क, का, की , म, मा, मी, की ध्वनि में अन्तर समझाया गया। प के ड़ंड़ा लगा देगें तो किसकी आवाज आयेगी पा की आवाज आयेगी व ड़ंड़ा लगा दो लुंगड़ी ओड़ा दो तो किसकी आवाज आयेगी, इसकों क्या बोलेगें इन्द्रा धीरे–धीरे कोशिश करके बोली पी की आवाज आती है।
- ध्वनि व चिन्ह की समझ हेतु बोर्ड़ पर वर्ण/अक्षर लिख कर गोले लगवाये गये। शब्द बोले गये काकी, काकी में पहले किसकी आवाज आती है। का की आवाज आती है। पीछे से किस की आवाज आती है– 'की' की आवाज आती है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

माह नवम्बर 2009

- वर्कशीट ली गयी।
- वर्कशीट में ध्वनि व चिन्ह की पहचान पक्की करने के लिए शब्द बोले गये व प्रथम अक्षर ध्वनि की पहचान कर गोला लगाकर गोला लगाये गए अक्षर को लिखवाया गया। माह नवम्बर में इन्द्रा ध्वनि की पहचान कर चिन्ह पर गोला समझ से लगाकर लिख लेती है।
- वर्ण/अक्षर का श्रुतलेख भी लिख लेती है। माह नवम्बर तक इन्द्रा ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान करने लगी।

माह दिसम्बर 2009

- पास–पास की दो ध्वनियों को जोड़ा व अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण करने का अभ्यास करवाया गया। इन्द्रा ने दो ध्वनियों को जोड़ने का अभ्यास शुरू किया। शुरू में वह दो ध्वनियों को जोड़ नहीं सकी । अक्षर चार्ट में का और की बोला फिर दोनों को मिलाकर बोला काकी, इन्द्रा से पूछा गया कि तेरे कितनी काकी है। इन्द्रा ने बताया मेरे एक काकी है। इन्द्रा से बोर्ड़ पर काकी लिखवाया गया और कहा गया कि काकी का चित्र बना। तो उसने काकी का चित्र बनाया। इसी प्रकार पास की दो ध्वनि को जोड़ना व अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण करना व चित्र बनाने में समझ बनने लगी।
- ध्वनि व चिन्ह की पहचान व दोहरान हेतु कविता सुनाई जाती लाला लाल लोरी दुध की कटोरी कटोरी में पतासा लाला करे तमासा.....कविता के शब्दों की प्रथम ध्वनि एवं चिन्ह की पहचान भी करवाई गई।
- फ्लैश कार्ड़ द्वारा पास–पास के दो चिन्ह को जोड़कर अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण भी समझ से कर लेती है। दिसम्बर माह में वर्ण/अक्षर ध्वनि व चिन्ह की पहचान हेतु वर्कशीट ली गयी।
- श्रुतलेख भी लिया गया।
- वर्ण/अक्षर के शब्दों का शब्द दीवार में गतिविधि द्वारा काकी, नानी, लाली, मामी, शब्दों की पहचान करने लगी व फ्लैश कार्ड़ व अक्षर चार्ट में अक्षर की पहचान करने लगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

- रंगों के शब्दों का निर्माण करने लगी जैसे, नीला, पीला, लाल, काला। अन्य शब्दों का निर्माण भी करने लगी जैसे नल, माला, काकी, लाली, कम, नाक, कान, के चित्र भी बनाने लगी।

माह जनवरी 2010

- क की ध्वनि और चिन्ह की पहचान व वर्ण/अक्षर /शब्दों का श्रुतलेख लिखवाया गया।
- वाक्य का श्रुतलेख भी लिखवाया गया। जैसे, लाली नल का पानी लाई।
- वाक्य का पठन उच्चारण धारा प्रवाह से कर लेती है।

माह फरवरी 2010

- इन्द्रा तीन अक्षर के शब्दों का निर्माण समझ से करने लगी मकान, पपीता, पालक, नमक, व चित्र भी बना लेती है।
- शब्द सुनकर शब्द पर गोला लगाना व लिखना भी कर लेती है।
- शब्द सुनकर शब्द के अक्षर पर गोला लगाकर लिख लेती है व चित्र भी बना लेती है।
- अक्षर चार्ट में अर्थपूर्ण शब्द खोज लेती है व चित्र भी बना लेती है जैसे लीला आई, कान, आम, पानी, कील, पाला, पान,
- शब्द जोंड़ियों को लाईन खींचकर जोड़ना व लिखना भी समझ से कर लेती है व छोटे–छोटे वाक्यों का निर्माण भी कर लेती है जैसे :–
- लाली नल का पानी लाई ।
- मामी काली माला लाई।
- इन वाक्यों का धारा प्रवाह से पठन, उच्चारण समझ के साथ कर लेती है।
- वाक्य में आएं शब्दों के चित्र भी बना देती है।

माह मार्च 2010

- इन्द्रा ने शब्द खोज का दोहरान जारी रखा। वह दो ध्वनियों को जोड़कर अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण कर लेती है एवं उसके अर्थ को दर्शाने के लिए चित्र भी बना लेती है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

- इन्द्रा आत्म–विश्वास से कविता माला लाना माला लाना..... आई नानी आई व पीना–पीना पानी पीना..... का पढ़न, उच्चारण व कविता के वाक्यों का श्रुतलेख लिख लेती है।
- फ्लैश कार्ड़ द्वारा कविता के वाक्यों का निर्माण कर लेती है एवं गतिविधि द्वारा कविता के शब्दों की पहचान कर लेती है।
- शब्द ताली द्वारा शब्दों के अक्षर की पहचान व शब्द का निर्माण भी समझ से कर लेती है।
- छोटे–छोटे वाक्य का निर्माण समझ से कर लेती है। वाक्य का उच्चारण, पढ़न समझ से कर लेती है।

माह अक्टूबर से मार्च में इन्द्रा की प्रगति की झलक

	माह अक्टूबर 2009	**माह नवम्बर से जनवरी**	**माह फरवरी**	**माह मार्च 2010**
इन्द्रा	वर्ण समूह–1 के वर्णो का लेखन। ध्वनि व चिन्ह की पहचान नहीं थी।	वर्ण समूह–1 के वर्णो व अक्षरों की ध्वनि व चिन्ह की पहचान। पास–पास के अक्षरों की ध्वनियों जोड़कर शब्द बनाना।	वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट से बनने वाले शब्दों का निर्माण। कविताओं का उच्चारण। छोटे–छोटे वाक्यों का फ्लैश कार्ड़ द्वारा निर्माण।	वर्ण समूह–1 की कविता का पठन धारा प्रवाह से व बिना देखे लेखन। वर्ण समूह–2 के वर्णो व अक्षरों का समझ से ज्ञान। शब्दों का श्रुतलेख लिख लेती हैं।

9.5 मुकेश बागरिया के शिक्षण कार्य की माह अक्टूबर से माह मार्च में प्रगति

माह अक्टूबर

- मुकेश के पढ़ने–लिखने के तरीकों को समझने के लिए रिसर्च शुरू किया गया। मुकेश रात्रिशाला में पढ़ने आता तो, है परन्तु वह अक्टूबर माह तक क भी लिखना पढ़ना नहीं सीख सका। मुकेश को क पढ़ने–लिखने और सीखने में आ रही समस्या का बारीकी से अध्ययन शुरू किया गया।
- शुरू में यह पाया गया कि वह बड़ता अपने हाथ में ढ़ीक तरह से नहीं पकड़ पाता था। सबसे पहले शुरूआती मूल्यांकन लिया गया।
- शुरूआती मूल्यांकन में मन से चित्र बनाना एवं श्रुतलेख लिखवाया गया।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बच्चों को शब्द सुनकर उसकी शुरूआती आवाज वाले वर्ण पर गोला लगाना था और फिर लिखना। शुरूआती मूल्यांकन से पता लगा कि मुकेश को कुछ भी नहीं आता है। मुकेश को सबसे पहले बड़ता व चौंक पकड़ना, स्लेट को सीधा रखना सीखाया गया। चार–पाँच बार हाथ पकड़कर क लिखने का अभ्यास करवाया गया।

- मुकेश को हाथ पकड़कर क के बुनियादी मोड़ का अभ्यास कविता द्वारा करवाया गया। आड़ी लकीर, खींचता है। खड़ी लकीर खींचता है। बाये तरफ गोला लगाता है, लकीर के व दांयी तरफ हाकूड्या लगाता है। मुकेश को पूछा गया कि क्या लिखा क लिखा, लेकिन कभी उसे प पढ़ता है।
- चित्र बनाने के लिए कहते है तो स्लेट पर घर का चित्र बनाता है। कहता है यह घर है और कुछ लकीरें खींचकर कहता हैं यह बकरियां है। अक्षर चार्ट में पहचान कभी सही कर लेता है और कभी क को प पढ़ता है।

माह नवम्बर 2009 से जनवरी 2010 में वर्कशीट ली गयी। उसमें मुकेश ने घसीटे कर दिए। क के बुनियादी मोड़ को पक्का कराने में दो महीने का समय लगा। क लिखने का दोहरान करवाया गया तो मुकेश कभी क को सही लिखता है तो कभी क को उल्टा लिखता है। मुकेश बीच में नाराज भी हो जाता था। क के बुनियादी मोड़ का अभ्यास बोर्ड़ पर, हवा में, जमीन पर, अंगूली घूमाने का अभ्यास करवाया गया। अब मुकेश को क लिखना आ गया। क के बुनियादी मोड़ के बाद प के बुनियादी मोड़ का अभ्यास शुरू किया गया। हवा में प बनाना बोर्ड़ पर प बनाना, स्लेट पर पर लिखना, जमीन पर प लिखना, प के बुनियादी मोड़ के लिए दादा को गेड्यों मांड़, बाबू को गेड्यों मांड़, मुकेश फटाफट दादा का गेड्या मांड़ देता था व बाबू का गेड्यां मांड़ देता। जब मुकेश से पूछते तो बताता। मुकेश को कहते की बोर्ड़ पर दादा को गेड्यों व बाबू को गेड्यों मांड़ तो मुकेश फटाफट 'प' मांड़ देता। अक्षर चार्ट में दादा, बाबू के गेड्यों की पहचान करता एवं कहता कि ओ प हैं। प पढ़ना–लिखना आ गया तो म, ल, न के बुनियादी मोड़ का अभ्यास शुरू किया गया। बोर्ड़ पर म, ल, न के बुनियादी मोड़ का अभ्यास करवाया जाता तो मुकेश भी अपनी पाटी में सही लिखता था। मुकेश वर्णो की पहचान कर लेता परन्तु अक्षर की पहचान एवं स्वर अ,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आ, ई की पहचान नहीं कर सका। ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान पक्की नहीं हो पाई। माह फरवरी 10 व माह मार्च 10 में मुकेश क, प, म, ल, न का श्रुतलेख लिख लेता है। कभी–कभी मुकेश जमीन पर लेटकर पाटी पर झुक कर लिखता है। श्रुतलेख को मुकेश से पढ़वाया गया। मुकेश क, प, म, ल, न को सही पढ़ता है। परन्तु ल को क पढ़ता है। कभी–कभी भूल जाता है। मुकेश को क, प, म, ल, न से शुरू होने वाले शब्द पूछे गए तो मुकेश नाम नहीं बता सका। ध्वनि की पहचान कभी सही करता है तो कभी गलत करता है। अक्षर दौड़ का अभ्यास शुरू किया गया। मार्च के प्रथम सप्ताह में मुकेश ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान तथा श्रुतलेख कराने पर समझ के साथ कर लेता है। वर्तमान में मुकेश अपने माँ–बाप के साथ हरियाणा चला गया। वे वहां गेहूँ की कटाई करने गए है।

माह अक्टूबर से मार्च की प्रगति संक्षिप्त में

	माह अक्टूबर 2009	**माह नवम्बर से जनवरी**	**माह फरवरी**	**माह मार्च 2010**
मुकेश	वर्ण/अक्षर की पहचान नहीं, क भी लिखना नहीं आता था।	क, प, म, का बुनियादी मोड़, क, प, म, की पहचान,	वर्ण समूह–1 के वर्णो का बुनियादी मोड़ सीख पाया परन्तु वह कुछ वर्णो को भूल जाता हैं	ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान, तथा श्रुतलेख कराने पर समझ के साथ लिख लेता हैं।

10. भाग 2 केस स्टेड़ी

10.1 केस स्टेड़ी–अनिता प्रजापत

अनिता और इन्दिरा दोंनों सहेलियां हैं। दोनों के घर पास–पास हैं। अनिता और इन्दिरा के घरों के बीच एक खिड़की हैं जो सम्पर्क बनाने में अच्छा कार्य करती हैं। दोनों लड़कियों की उम्र 7 से 8 वर्ष के बीच हैं। ये दोनों सहेलियां अपनी दिनचर्या व समय साथ–साथ बिताती हैं, साथ में दोनों की दादीयाँ भी गहरी दोस्त हैं। जो खिड़की हैं वह प्रमाण है कि दादीयों के बीच गहरी दोस्ती हैं। अन्तर दोनों के

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

घरों में केवल जातियों का हैं। अनिता प्रजापत है और इन्दिरा जाति से मेघवाल हैं। परन्तु दोनों के परिवारों की बुजुर्गो से बातचीत करने पर लगा ही नहीं कि दोस्ती में जाति कहीं मायना रखती है। इन्दिरा की दादी ने तो यहां तक कह दिया कि माँ जाई बहनों से भी अधिक हमारा प्रेम हैं। अनिता की दादी के लिए इन्दिरा की दादी बोलती हैं ये मेरी भोजाई लगती हैं। मगर प्यार देखा जाए तो बहनों से अधिक है। हाँ एक और अन्तर मुझे नजर आया जो कुछ मायने नहीं रखता हैं। वह था अनिता का घर थोड़ा बहुत सम्पन्न था यानि खाने–पीने में कोई कमी नहीं थी। घर पक्का था।

अनिता के पिता हनुमान जी से बातचीत हुई। उनकी मानसिकता उनकी बातों में झलकती है। उनका कहना था कि लड़कियों को पढ़ाने से क्या होगा, हाँ रात्रिशाला में भेज रहे हैं। गाँव में आगे पढ़ाने के साधन भी नहीं है। जब उनकी शिक्षा के लिए पूछा तो उन्होंने बताया कि वे 9वीं फेल है। वे मार्बल एरिया में कार्य करने जाते हैं। उनकी माँ जो अनपढ़ हैं ने कहा की मैं पढ़ी लिखी होती तो अध्यापिका से बातचीत दूसरे तरीके से करती। बच्चियों को पढ़ाना बहुत जरूरी हैं। तब हनुमान जी ने कहा मैं भी पढ़ाना चाहता हूँ मगर हमारे घर की स्थिति ऐसी है जिसमें हम पढ़ाना चाह कर भी नहीं पढ़ा पाते हैं। माँ ने भी शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। जब उनसें बात हुई तो उन्होंने बताया कि अनिता मेरी सबसे बड़ी बेटी है । तीन भैंसे है उन्हें चराने के लिए इसे भेज देती हूँ। मैं फैमिन में जाती हूँ व बच्चों को रखती हूँ। अनिता से छोटे दो भाई व एक बहन हैं। घर के बहुत सारे काम होते है। साथ में मेरी सांस की बहन है जिनके कोई औलाद नहीं है। अनिता उनकी मदद करती हैं।

अनिता की माँ की दुनिया, परिवार और बच्चें पालने को ही प्राथमिकता देती हैं। इस घुंघट में उसे केवल ये ही नजर आता है। साथ ही खेती–बाड़ी का काम या कोई दानकी (मजदूरी) मिले जो कर लेती हैं। पिता मार्बल का कार्य करके इतना थक जाते है कि वे बच्चों के बारे में सोचते ही नहीं है।

अनिता 7 से 8 वर्ष की है। वह घर के सारे कार्य करना सीख गई है। साथ ही अपनी मौसी दादी को भी अपनी छोटी–छोटी बाँहों का सहारा देती हैं। अनिता बहुत चुप रहने वाली बच्ची हैं। जब माँ बाते कर रही थी वह चुप होकर सुन रही थी। मैं उसके अन्दर के सोचों में नहीं जा पा रही थी। लेकिन उसकी आँखों में अपनी माँ के कामों में हाथ बटाँने की गम्भीरता लिए हुए थी। जब मैंने अनिता से पूछा अनिता तुम्हारा कभी स्कूल जाने का मन नहीं हुआ या जब गाँव की लड़कियां स्कूल जाती है तुम्हारा मन नहीं किया स्कूल जाने

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

का। अनिता चुप खड़ी मुझे देख रही थी। वह धीरे से ना करते हुए सिर हिला दिया। मैंने भी उससे ऐसा प्रश्न पूछ लिया जो शायद अनिता के दिलों–दिमाग से कोसों दूर था। शायद उसके मन को इस प्रकार से कुछ सोंचने का मौका दिया ही नहीं। लेकिन आज अनिता रात्रि विद्यालय की छात्रा है। उन्हें वहां पढ़ना अच्छा लगता है। वह लिखना पढ़ना सीख गई है। इसलिए जब मुझे मिली तो उन्हें पढ़ने लिखने की बात का वातावरण मिला। मैंने अनिता से पूछा की आपकों कितना पढ़ना–लिखना आ गया, तब तपाक से बोली आप जो कहों मैं लिख दूँगी। उसका ये आत्म–विश्वास बहुत ही मुझे उत्साहित करता है। ये रात्रि विद्यालय इन बच्चों को बहुत ज्यादा नहीं मगर उनकी उस दीवार को तोड़ता है जो सहारा नहीं देती। बल्कि कोई कोना तैयार करती है जहां वे अपने मन का ताना–बाना बुन सके और अपनी दुनियां का थोड़ा बड़ा कर सके।

10.2 केस स्टेड़ी–इन्द्रा मेघवंशी

इन्द्रा अपने बहन भाईयों में दूसरे नम्बर पर हैं। वह अभी 7–8 व र्ा की

दुबली–पतली बच्ची हैं। उसके एक बड़ा भाई हैं, जो सरकारी विद्यालय में कक्षा 8 में पढ़ता है। एक बहन छोटी है व दो भाई छोटे है। कुल 5 भाई–बहन है। इन्द्रा और छोटा भाई ड़ांड़ा (जानवर) चराने जाते है। पिताजी का काम पौधों को पानी पिलाना है। उन्हें 3,000/–रू मिल जाते है। वे 8वीं कक्षा तक पढ़े–लिखे है। उसकी माँ ने बड़े गर्व से अपने पति की शिक्षा के बारे में बताया। मगर स्वयं निरक्षर है। एक भाई छोटा है जो घुटने ही चलना सीखा है। इसें खाली समय में इन्द्रा रखती है। वह अपने भाई को बहुत प्यार करती है।

उसका घर कच्चा हैं। जिसमें जरूरत की चीजें व छोटी आटा पीसने की घट्टी हैं। दादी ने अपने पर आन पड़े दुख को बिना झिझक बताना ाुरू किया। उन्होंने बताया मेरे दो लड़कों की ाादी, दो बहनों के साथ की। यानि इन्द्रिरा की माँ की बहन ही मेरे छोटे बेटे की पत्नि थी। छोटे बेटे को एक पुत्र भी हुआ लेकिन वह यहां नहीं रहती है। वह नाते चली गई। अपने पुत्र को यहां छोड़ गई। हमें उसके जाने का बहुत गम है। दूसरी पत्नि को लाने के लिए काफी पैसा चाहिए। दादी जी बहुत देर तक अपने घर के दुख, फिर अपनी गरीबी के कारणों पर बातचीत करने लगी। बोली पक्का मकान बना नहीं पाएं। कमाई का साधन नहीं है। हाँ अब नरेगा चली है उसमें रोजगार मिल जाता है। गुजारा हो जाएंगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दादी जी बिना रोके अपने जीवन की सारी कहानियाँ जो दुखों से भरी थी सुनाती रही साथ ही में उन्होंने एक बात बड़ी जोर दार ढ़ँग से कही ''मेंरी छोटी बहु पांचवी तक पढ़ी थी''। इन्द्रा की मम्मी से जब इन्द्रा की शिक्षा को लेकर बात की तो उन्होंने बताया की इन्द्रा और उसका छोटा भाई ड़ांड़ा (पशु) चराने जाते है। घर में दूध, दही, छाछ हो जाता है। बस उसी से थोड़ा गुजारा हो जाता है। दिनशाला में पढ़ाने का सोचा ही नहीं। घर की स्थितियां अच्छी नहीं है। हम बहुत गरीब है। हमारी अभी कुछ साल पहले मेरी बहन यानि देवर की पत्नि नाते चली गई उससे घर में बहुत परेशानी रहीं। उसका एक बालक भी यही हैं। मेरे 5 बच्चे है। मगर अब एक बालक देवर का भी है। उसे भी मैं अपने साथ रखती हूँ। सभी का खर्च चलाने में पैसा बच ही नहीं पाता है।

इन्द्रा अभी 7–8 वर्ण की हैं उसे इन सब बातों का ज्ञान हो गया है। घर की स्थितियों से बहुत ज्यादा वाकिफ हो गई है। वो जान गई है कि मेरे घर की स्थिति अच्छी नहीं है। माँ भी दुखी रहती है। उसने पूछने पर यहीं कहा, कि मैं दिनशाला नहीं जाना चाहती। उसका मन, कुछ क्यों करेगा ? ऐसा कुछ, जो हो ही नहीं सकता है। उसने अपने मन की इच्छा को परिस्थितियों में ढ़ाल दिया है। वह कहती है मुझे छोटा लाला खिलाने में अच्छा लगता है और ड़ाड़ा चराने में भी ।

इन्द्रा दुबली–पतली है। वह रात्रिशाला में जाने लगी है। वहां वह सब करती है, जो दिनशाला में होता है। उसने अपनी माँ को वह सब लिखकर बताया जो उसने रात्रिशाला में सीखा। जब वह लिख रही थी उसके मुँह पर चमक थी । वह खुश लग रही थी। उसकी माँ भी उसे देख कर खुश हो रही थी। माँ भी बेबस सी लग रही थी। शायद ये सोच रही थी कि काश मैं अपनी बच्ची को पढ़ाने भेज देती। मगर माँ का हँसता चेहरा बता रहा था कि वे बहुत बेबस है। इन्द्रा व उसके भाई के ड़ांड़ा चराने से इस घर को दूध, दही, छाछ, मिलता है। जो बच्चें खा–पी लेते है। सब्जियाँ तो रोज बनती नहीं है। चटनी रोटी ही नसीब होती है। हाँ जो बंजर जमीन है उसमें थोड़ी बहुत खेती हो जाती है। वहाँ काचरा, ककड़ी, हो जाती है जो बच्चे खा लेते है। यहीं है उनकी हरी सब्जी।

इन्द्रा अपने परिवार की स्थितियों को समझती है । उसके पास अपने आप को ढ़ालने के सिवाई कोई विकल्प नहीं है। उसका भवि य स्वयं के हाथों में नहीं है । वह क्या करना चाहती, क्या बनना चाहती हैं वह कल्पना भी नहीं कर सकती । यहां तक की सोच भी नहीं सकती है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

10.3 केस स्टेड़ी–किरण बलाई

किरण गायें चराने का काम करती हैं। वह कभी भी स्कूल नहीं गई। जैसे ही थोड़ी बड़ी हुई वैसे ही गायों की जिम्मेदारी सभालने लगी। वह अपने माँ–बाप की पहली सन्तान हैं। उससे छोटी एक बहन और एक छोटा भाई हैं, जो बालवाड़ी में पढ़ने जाते हैं। उसके दादी–दादा भी है। किरण के पापा के तीन भाई हैं। सब अलग–अलग रहते हैं दादा–दादी किरण के पापा के साथ रहते है। उसके पापा का एक भाई जाजोता दूसरा किशनगढ़ व दो रामपुरा रहते है।

किरण की अभी उम्र 7–8 साल की है। उसका अधिक समय, यानि सुबह 8.00 बजे से ाम 4.00 बजे तक घर से बाहर ही निकलता है। उसके पापा 8वीं तक पढ़े है । माँ को साइन (हस्ताक्षर) करना ही आता है। घर पक्का है और तीन कमरें हैं। उसके पापा भजन आदि करने जाते है। माइक वगैरा किराये पर देते है तथा किशनगढ़ में मार्बल एरिया में काम करने जाते है।

परिवार की स्थिति ढ़ीक लगी। जब पूछा विद्यालय बच्चीं को क्यों नहीं भेजा। तब उसके पापा बोले घर में दादी–दादा बूढ़े हो गए हैं। गाय चराने वाला कोई नहीं है। इसलिए हमनें स्कूल नहीं भेजा। जब उनसे पूछा गया कि आप 8वीं पढ़े हो, क्या आपकी पढ़ाई आपकी जिन्दगी में मायने रखती है ? तब उन्होंने कहा बहुत मायना रखती हैं। मैं स्वयं पढ़ लिख लेता हूँ। कागज पढ़ना, लिखना मुझे आत्म–निर्भर बनाता है। जब पूछा गया क्या लड़कियों को आत्म–निर्भर नहीं बनाना चाहिए ? तब उन्होंने कहा हम पढ़ाई के महत्त्व को जानते है लेकिन जानवर भी तो चराना जरूरी हैं। किरण के पिता के बड़े भाई ने कहा कि हम किरण के पिता को बहुत पढ़ाना चाहते थे हमने इसे कोई काम घर का नहीं करने दिया। मगर ये पढ़ा हीं नहीं। उसके पिता बोले में अधिक पढ़ाई इसलिए नहीं कर पाया क्योंकि अंग्रेजी और विज्ञान मेरे लिए कठिन थे। मुझे समझ में ही नहीं आते थे। इसलिए मैंने पढ़ाई तो की मगर फैल हो जाता था।

किरण के पापा का भी सपना टूट गया। वह भी उन्हीं कामों में काम करने लगे जिन्हें वह नहीं करना चाहते थे । उसके पापा की स्थिति अच्छी थी। उनके भाई उन्हें पूरा सहयोग दे रहे थे। मगर इसके बावजूद वह पढ़ नहीं सकें। उन्होंने कहा भी अंग्रेजी ुरू से पढ़ाना

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

चाहिए। सरकारी स्कूल में पढ़ाई अच्छी नहीं है। चाहें जो भी कारण रहे, उसके पापा ज्यादा पढ़ नहीं पाएं।

किरण दुबली–पतली कद की लम्बी सी सुन्दर लड़की है। वह स्कूल कभी नहीं गई। वह स्कूल जाना चाहती हैं। उसे पढ़ने में बहुत रूची है । मगर परिवार के आदेशो के आगे अपनी मर्जी कभी जाहिर नहीं करती है। वह क्या करे उसी की तरह अन्य बच्चियां भी तो है जो विद्यालय नहीं जाती है। ाायद किरण उन्हें देखकर अपने मन को समझा लेती है। हर बच्ची को खेलने–कूदने का मौका मिलना चाहिए। मगर किरण घर की कमाई में अपना योगदान दे रही हैं। उसके इस कार्य को महत्त्व नहीं दिया जाता हैं। या यू कहें कि उसे अपना बचपन इन गायों को चराते हुए खो देना पड़ेगा और जैसे ही जवान होगी गृहस्थी की जिम्मेदारी को ना चाहते हुए भी ओढ़ लेगी। उसे अपनी बातें कहने का मौका नहीं दिया जाता। यहाँ तक की अपने सपने बुनने की आजादी भी नहीं होती। किरण क्या करे यह सब उसके परिवार तय करेगें।

किरण अब रात्रिशाला में पढ़ने जाती है। वह अब अक्षर पहचान करने लगी हैं। उसे वहां पढ़ना अच्छा लगता है। ये रात्रिशाला उसें दिशा देने में सहयोग करेगीं। वह वहां अन्य बच्चों के साथ बहुत मन लगाकर पढ़ती है। उसने कविताएं याद कर लिखना शुरू कर दिया है। उसने कहा अब मुझे पढ़ना लिखना आ गया है।

10.4 केस स्टेड़ी : मुकेश बागरिया

मुकेश बागरिया 6 वर्ष का बालक है। वह अपनी नटखट हरकतों से सबका मन मोह लेता है। वह खुली किताब की तरह है। उसके मन व दिमांग में दुनिया की ऊँच–नीच का ज्ञान नहीं हैं। वह निड़र है । उसका मन एकाग्र होकर कहीं भी नहीं टिक पाता है। वह बहुत संचेत है। कक्षा में कहा क्या हो रहा हैं उसे जानने की जिज्ञासा हमेशा बनी रहती हैं। उसका पढ़ाई में मन तो लगता है, मगर चंचलता के कारण बहुत देर पढ़ने में मन नहीं लगा पाता हैं।

मुकेश बागरिया जाति का हैं। स्वर्ण जाति समाज में बागरिया जाति को नीची जाति का माना जाता है, वे उन्हें हासिये पर ही देखना चाहते हैं। उनकी मानसिकता यही है कि बागरिया तो अच्छे नहीं होते है। इन्हें तो गाँव से दूर ही रहना चाहिए । मुकेश का कच्चा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मकान भी गाँव से दूर ही बना है। उनकी तो अलग कॉलोनी ही बना दी गई हैं। बागरिया जाति पहले किसी जमाने में शिकार कर के व मजदूरी करके ही अपना जीवन यापन करते थे। मगर आज उनकी कॉलोनी बना देने से यह अब अपने समाज में अलग ही रहते है।

मुकेश को अपनी जाति का एहसास नहीं है। वह अपनी प्यारी बातों से कक्षा में सबका प्यारा बच्चा कहलाता हैं। उसे रात्रिशाला में अन्य जातियों के बच्चों के साथ उठना–बैठने का मौका मिलता है। यहां पर सब बच्चो से अच्छा व्यवहार किया जाता है। अन्य बच्चें भी जो उसके हम उम्र है, जाति का भेद नहीं रखते हैं। लेकिन जो बच्चे बड़े है, जिन्हें दुनिया की ऊँच–नीच समाज ने सिखाई हैं, भलीभांति बागरिया जाति के प्रति अपनी सोच बनाये हुए हैं। मगर मुकेश बेपरवाह अपना बचपन बहुत ही खुशी–खुशी बिता पा रहा है। उसे बकरियां चराने की जिम्मेदारी नहीं है। वह तो दिनभर अपनी कॉलोनी में बच्चों के साथ खेलता रहता हैं। उसे घर में अपने माँ–बाप का साया तो शाम या देर रात तक नसीब होता है। जब माँ–बाप घर पर अपनी मजदूरी खत्म कर किशनगढ़ मार्बल एरिया से आते है। उन्हें वहां से आने में काफी वक्त हो जाता है। माँ आते ही खाना बनाने के काम के लग जाती हैं। पानी लाना, लकड़ी लाना ,आदि। उसके पास बच्चों की दिनचर्या के बारे में पूछने का समय ही नही है। उसे तो सुबह उठने से लेकर रात्रि तक काम ही करना है। पिता भी छोटे–छोटे कामों में लग जाते हैं। जब खाना बन जाता है तो मुकेश रोटी खाता हैं और सो जाता है। खाने में ज्यादा कुछ नहीं बस रोटी और चटनी ! कभी–कभी ही सब्जी बना पाते हैं।

परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है । 13 बीघा जमीन हैं। उसमें फसल नहीं होती है। अकाल की मार इस परिवार को मजदूरी के लिए दूर–दूर भागने पर मजबूर करती है। मुकेश के दो बहने है। एक बहन छोटी है। मुकेश व उसकी बडी बहन अपनी छोटी बहन को रखते है। व घर की देखभाल करते है। उन्हे अपने माँ–बाप के साथ गाँव छोड़कर बाहर भी जाना पड़ता है। मुकेश के पापा ने बताया हम बच्चों को पढ़ाने का सोच भी नहीं सकते हैं। हम फीस नहीं भर पाएंगें। साथ ही हमें कमाने वास्ते गाँव से दूर कई दिनों के लिए जाना पड़ता है। हमने यहां चल रही रात्रिविद्यालय में दोनों बच्चों को भेजा हैं। वहीं पर ये सीख जाएंगें। वे स्वयं दो कक्षा तक पढ़े हैं। उन्होंने कहा मैं नहीं ज्यादा पढ़ सका। क्योंकि शुरू से हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मुकेश व उसकी बहन रात्रिविद्यालय में आते हैं। वह अब पढ़ने व लिखने से धीरे–धीरे सम्बन्ध बना रहा है। वह रोज विद्यालय आता हैं। पहले की अपेक्षा अब उसे लिखना पढ़ना आ गया है। अपने नन्हें हाथों से क, प, म, ल, न लिखना शुरू किया है।

10.5 केस स्टेड़ी : सन्जू बागरिया

सन्जू की उम्र 7–8 वर्ष है। उसके पिता रामेश्वर 8वीं कक्षा पढ़े हैं। माँ अनपढ़ है। मकान में एक कमरा पक्का हैं। जो किसी एस.ड़ब्ल्यू.आर.सी. संस्था ने बनवाया हैं। वह बागरिया जाति की है। बागरियों की कॉलोनी अलग बनी हैं। ये अन्य जातियों के साथ नहीं रह रहे हैं। इनकी कॉलोनी गाँव से थोड़ी दूरी बनी है। बागरिया जाति के 10–11 घर ही हैं। सन्जू के पिता ने बताया कि वे पढ़े लिखे हैं और उन्होंने संस्था में (तिलोनिया) काम किया है। वे बागवानी का काम करते थे। पढ़ाई छोड़ने का कारण था उनकी शादी कर देना। फिर वे मजदूरी करने लगे थे। अभी वर्तमान में उनकी जमीन का झगड़ा चल रहा है। उन्होंने बताया, उनके पिता से जमीन, जाट ने पिता से नशे में धोखा देकर, अंगूठा लगवा कर छीन ली हैं। वे इसी जमीन के लिए बहुत दुखी है और अपनी जमीन वापिस लेने की कोशिश कर रहे हैं।

सन्जू 16–17 बकरियां को छोटी उम्र से चराती हैं। उसके एक बहन व तीन भाई है। दोनों भाईयों में जो बड़ा बेटा है वह प्राईवेट स्कूल में जाता है। दूसरा भाई सरकारी स्कूल में पढ़ने जाता हैं। तीसरा अभी गोद में है। सन्जू कभी स्कूल नहीं गई। वे रात्रिशाला में पढ़ने जाती है। जब पिता से पूछा दोनों बच्चों को आप विद्यालय भेज सकते तो सन्जू को पढ़ाने का क्यों नही सोचा ? तब पिता ने कहां कि सन्जू अपने छोटे भाई को रखती हैं और दादाजी के साथ बकरियाँ भी चराती है। दादा जी बूढ़े है। इसलिए संजू को इस काम में घकेल दिया गया। पिता की बातों से लड़की की पढ़ाई को लेकर उनकी मानसिकता उजागर हो रही थी। वे कह रहे थे लड़कों को पढ़ाना जरूरी है। लड़कियां तो घर काम ही करती है। परन्तु सन्जू का पढ़ने का मन है। वह स्कूल जाना चाहती हैं। उसने कहा भी मेरा भी स्कूल जाने का मन करता है। सन्जू का मन उनके माता–पिता की दकियानूसी मानसिकता के कारण दब गया। वह अपना पूरा बचपन बकरियां चराने और अपने छोटे भाई को खिलाने में खो देगीं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सन्जू कहती है मेरे पापा के पास मोबाइल है और वह दारू भी पीते हैं। वे किसी का कहना भी नहीं मानते है। मम्मी रोज दारू पीने को मना करती है। वह अभी छोटी है तो भी उसने अपने परिवार की वे सब छोटी–मोटी बाते जान ली है। इसका उसके कोमल मन पर प्रभाव पड़ा है। सन्जू अपने परिवार की गतिविधि अपनी उन नन्ही आँखों से देखती रहती हैं जो उसके जीवन की राहे बन रही है । वह क्या करे। इस नन्ही सी जान को सपने देखने का या अपने मन की बात किसी को कहने का हक नहीं हैं। अपने पिता की बातों को चुपचाप सुनने के अलावा उसके पास विकल्प नहीं है। वह तो वहीं करती हैं जो उसके माँ–बाप कहते है।

बागरिया जाति की सन्जू रात्रिशाला में आती है। मन लगाकर जो वहां सिखाया जाता है उसे ग्रहण करती है। पूरा दिन शिक्षा से दूर खुले आकश में अपने भाई को लेकर बकरियां चराने चली जाती है। माँ–बाप मजदूरी के लिए किशनगढ़ चले जाते है। देर रात तक घर आते हैं। सन्जू अपने घर के छोटे–मोटे काम भी करती हैं। अपनी माँ को उसके घर के काम में पूरा सहयोग करती है। सन्जू की माँ बताती है कि पहले हमारे समाज में शिक्षा को महत्त्व नहीं दिया जाता था। मगर अब हम अपने बच्चों को पढ़ाने लगे है। अब हमारा ठौर–ठिकाना भी हो गया है। हम अपने पैतृक धंधे को छोड़कर मजदूरी का काम भी करने लगे हैं। मगर अभी लड़कियों को स्कूल भेजने के लिए सोच नहीं बनी हैं। सन्जू की माँ स्वयं अनपढ़ है। मैंने पूछा क्या सन्जू की शादी कर दी तब उनकी माँ बोली अब हम छोटे बच्चों की शादी नहीं करते। सन्जू जब बड़ी होगी तभी हम उसकी शादी करेगें। सन्जू और उसकी बहन रात्रि विद्यालय में पढ़ने जाती हैं।

इस परिवार की आर्थिक स्थिति ढ़ीक नहीं हैं। चार बच्चे व बूढ़े दादा जी साथ ही रहते हैं। उनके पास 3–4 बीघा जमीन हैं, जो अकाल के कारण पैदावारी नहीं देती हैं। मजदूरी ही उनके लिए जीवीकों–पार्जन है। बकरियां दूध का साधन है। जिससे चाय की पूर्ती हो जाती है। साथ ही जो बकरे होते है उन्हें बेच दिए जाते है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

11. भाग 3 अध्यापक साक्षात्कार

11.1 रात्रिशाला अध्यापिका मुन्नी देवी द्वारा दिया गया साक्षात्कार

प्र. 1. रात्रिशाला के बच्चों के प्रति आपका सोच क्या हैं ?

उत्तर अध्यापिका श्रीमति मुन्नी जी ने बताया कि हमारी बच्चों के प्रति सोच यह है कि बच्चे पढ़े सीखे कविता के माध्यम से, खेल के माध्यम से बच्चों के भविष्य के प्रति सोचते है कि पढ़–लिखकर होशियार होगें बच्चों को समान सोचना चाहिए। भेदभाव नहीं करना चाहिए।

प्र. 2. बच्चों की पढ़ने–लिखने की प्रगति के बारे में आपके विचार क्या हैं ?

उत्तर **सन्जू :** के बारे में बहन जी ने बताया कि सन्जू को घर वाले स्कूल भेजने के लिए तैयार नहीं थे। सन्जू के माता–पिता से बात की गई कि सन्जू को अनपढ़ नहीं रखना हैं। पढ़ना है ताकि सन्जू दूध का छोटा–मोटा हिसाब कर सके। पढ़ने से हमारी तरह बहन जी बन जायेगी। तब जाकर स्कूल भेजने लगे। सन्जू शुरू में ड़रती थी। सेन्टर वालों कानाम लेते ही रोने लग जाती थी। कहती कि पकड़ कर ले जायेगे। सन्जू को समझाकर (पढ़ने के लिए आते है) ड़र दूर किया गया। पहले सन्जू को केवल क ही आता था। पद्धति के अनुसार पढ़ना शुरू किया। क, प, म, ल, न का अभ्यास करवाया गया। वर्ण समूह–1 के वर्ण क, प, म, ल, न से शुरू होने वाले शब्द बता देती है व चित्र भी बना देती है। ध्वनि व चिन्ह की पहचान कर लेती है। अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण कर लेती है व चित्र बना लेती है। मामी, काकी, लाली नानी, लाली, शब्द का निर्माण करने लगी।

मुकेश : को शुरू में कुछ भी नहीं आता था। धीरे–धीरे क, प, म, ल, न का बुनियादी मोड़ बताया गया । वर्तमान में मुकेश क, प, म, ल, न वर्ण लिख लेता है व पढ़ लेता है, बोल लेता है। मुकेश पहले पट्टी व बरता पकड़ना नहीं जानता था। अब पट्टी व बड़ता पकड़ने लगा है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रूकावटे : गाँव में कोई भी भली बुरी बात हो जाती तो माँ–बाप रोकते थे। फिर उनकों समझाते थे। अभिभावक बैठक करते रूकावट को दूर करते थे। घर पर थोड़ा काम–काज होता तो बच्चों को रोक लेते है। गरीबी स्थिति के कारण दिनशाला नहीं भेजते हैं। रात्रिशाला भेजते है। अभी मुकेश के माता–पिता गेहूँ काटने हेतु हरियाणा चले गए। मुकेश उनके साथ–साथ चला गया। मोटी–मोटी बेटियों को रात को पढ़ने भेजते है। लोग यह बाते भी करते है। हमारी छोटी बच्चियों को भी सिलाई सिखाओं जबकि छोटी बच्ची के पैर मशीन के पायदान तक भी नहीं पहुंचते है। जिसके कारण भी बच्चों को स्कूल भेजने से रोकते है।

प्र. 3. वर्ण समूह पद्धति से बच्चों में क्या बदलाव आया है ?

उत्तर पहले बच्चों को कका पढ़ाते थे तो बच्चों के समझ में नहीं आता था। बच्चे अध बीच में ही रह जाते थे। पद्धति के माध्यम से बच्चों को वर्ण की पहचान हई। शब्द निर्माण किया मामी, काकी, नानी व शब्दों के चित्र भी समझ के साथ बनाने लगी। पद्धति के लागू होने से बच्चे ने पढ़ाई की पकड़ की । सन्जू को कका लिखना पढ़ना भी नहीं आता था। पद्धति के हिसाब से वर्ण लिखना सीखीं मात्रा की पकड़ पहले नहीं थी। पद्धति के द्वारा मात्रा को एक साथ ध्वनि द्वारा चिन्ह के साथ जोड़ों से पकड़ करने लगी। ड़ंड़ा खीचना लुगड़ी आयेगा। ई.एल.पी पद्धति में समझ के साथ बच्चे शब्द निर्माण करने लगे। पद्धति से बच्चों में समझ के साथ पढ़ने–लिखने का बदलाव आया। यह बदलाव पहले नहीं था।

प्र. 4. शिक्षा के प्रति आपके सोच क्या हैं ?

उत्तर शिक्षा के लिए यही सोचते है कि बच्चे दो अक्षर सीखे। बच्चों को कुछ भी नहीं आता है तो बच्चे को शिक्षा देना जरूरी है। शिक्षा बच्चे के लिए जरूरी है। भविष्य के लिए दो अक्षर सीखना जरूरी हैं। पढ़ना जरूरी है। अनपढ़ नहीं रहना चाहिए। अनपढ़ सब खा जायेगे। पढ़े–लिखे को कोई नहीं खा सकता है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

प्र. 5. ई.एल.पी की पद्धति के प्रति आपके सोच क्या हैं ?

उत्तर ई.एल.पी पद्धति अच्छी है। इससे बच्चे जल्दी पकड़ कर रहे है। पद्धति द्वारा शब्दों की पकड़ बच्चे जल्दी कर रहे हैं। यह सरल तरीका था। पढ़ाने का बच्चों के लिए भी बोझ नहीं था। एक वर्ण का अभ्यास करना शब्द निर्माण करना सीखना। यह एक नया तरीका था । बच्चों को भी अच्छा लगा। ऐसी पद्धति चलती रहे तो बच्चों को पढ़ाने के लिए व हमारे लिए भी सरल तरीका हैं।

11.2 रात्रिशाला अध्यापक हनुमान जी द्वारा दिया गया साक्षात्कार :

प्र. 1. रात्रिशाला के बच्चों के प्रति आपका सोच क्या हैं ?

उत्तर अध्यापक हनुमान शर्मा ने बताया कि (पढ़े–लिखे) बच्चे अच्छे पढ़े–लिखे तो अच्छा काम करे। बुरे कामों से दूर रहे। लड़के–लड़की दोनों को समान समझना चाहिए। दोनों को पढ़ाना चाहिए। दोनों को पढ़ाना चाहिए। बच्चे पढ़ने से आपसी भेदभाव नहीं करेगें। मेहनत के साथ बच्चों को पढ़ाना जितना मेरे पास जान है। उतना बच्चों को दूं। बच्चों को सही रास्ता दिखाना अध्यापक की सोच हैं बोझ तो अध्यापक नहीं बाट सकता।

प्र. 2. बच्चों की प्रगित के बारे में आपके विचार क्या हैं ?

उत्तर किरण, इन्द्रा, अनिता को शुरू में क, की, पहचान नहीं थी। क भी पढ़ना लिखना नहीं आता था। शुय में पहचान करवाई। ध्वनि व चिन्ह की पकड़ करने लगी रेल–रेल गतिविधि द्वारा रेल में क, प, म, ल, न से शुरू होने वाले शब्दों के चित्र रेल में बनवाये। क, प, म, ल, न का श्रुतलेख लिखवाया। श्रुतलेख पढ़वाया गया। वर्ण/अक्षर का अभ्यास करवाने के बाद शब्द निर्माण का अभ्यास करवाया गया। इन्द्रा, किरण, अनिता, अर्थपूर्ण शब्दों का निर्माण अक्षर चार्ट से कर लेती है। वाक्य का निर्माण समझ के साथ कर लेती है। वर्ण/अक्षर/शब्द वाक्य का श्रुतलेख लिख लेती है। समझ के साथ शब्दों के

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

चित्र बना लेती है। इन्द्रा, किरण, अनिता, कविता का उच्चारण पढ़न समझ के साथ धारा प्रवाह से कर लेती है। वर्ण समूह–2 के वर्ण च, र, स, त, ग, का अभ्यास जारी है। धीरे–धीरे पकड़ करने लगी है।

प्र. 3. ई.एल.पी पद्धति से बच्चों में क्या बदलाव आया है ?

उत्तर पद्धति से बच्चा समझ के साथ पढ़ना लिखना सीखा। उदाहरण अक्षर चार्ट से अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण करना व चित्र बनाना व बोर्ड़ पर लिखना पढ़ना जैसे काकी, काका का चित्र बनाना। पद्धति में सबसे बड़ी बात देखी कि पद्धति से बच्चा ध्वनि और चिन्ह की पहचान ढ़ोस करता है। बुनियादी मोड़ से बच्चा सही लिखना सीखा। ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान करने लगा। पहले बच्चे रटते थे। अब रटते नहीं है। समझ के साथ ध्वनि व चिन्ह की पहचान करते है। पद्धति के लागू होने से जुड़ाव हुआ। क्योंकि इस में गतिविधि करवाई जाती है। जैसे रेल–रेल बच्चों को बड़ा मजा आता था। बच्चों में बदलाव को देखकर बच्चों के अभिभावक भी खुश होने लगे। इनमें भी रोचकता आने लगी।

प्र. 4. रूकावटे क्या आई है ?

उत्तर कुछ बच्चों के परिवारों से रूकावटे आने लगी जैसे बागरिया जाति के बच्चे पलायन पर चले जाते है। क्योंकि इनके माँ–बाप गेहूँ काटने हरियाणा जाते है। ये बच्चे भी इनके साथ जाते है। बागरिया जाति के लोग शाम को शराब पीते है। रोले करते है। शाम को बच्चों को पढ़ने नहीं भेजते है। नोरती के पिता की आर्थिक स्थिति खराब है। जमीन गिरवी रखी हुई है। बच्चे के सामने दूसरे से पैसे की माग करता है व नोरती को काम पर भेजताहै। थम जाती है। कभी–कभी रात को स्कूल नहीं जाती है।

प्र. 5. शिक्षा के प्रति आपके सोच क्या हैं ?

उत्तर शिक्षा बच्चों के लिए जरूरी है। पढ़ाना चाहिए। अनपढ़ नहीं रहना चाहिए। अध्यापक ने बताया कि बच्चों के लिए शिक्षा जरूरी है। बच्चों में अच्छे–अच्छे समझदारी आये।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

प्र. 6 ई.एल.पी की पद्धति के प्रति आपके सोच क्या हैं ?

उत्तर ई.एल.पी पद्धति बढ़िया है। इससे बच्चों समझ के साथ पढ़ लेता है। ई.एल.पी से बच्चे और अध्यापक बोर नहीं होते है। ई.एल.पी पद्धति सरल है। यह पद्धति परिवेश से जुड़ी हुई है। पद्धति रोचक है। छोटी कविता, चित्र पढ़न है। पद्धति से बच्चे समझ के साथ पढ़ना लिखना सीखते है। ई.एल.पी पद्धति से बच्चों की नीव मजबूत होती है।

12. बड़े व छोटे बच्चों की तुलना

विवरण	अक्टूबर / नवम्बर	दिसम्बर / जनवरी	फरवरी / मार्च
छोटे बच्चे	1. वर्ण भाषा के कुछ वर्णो की पहचान थी। 2. वर्ण / अक्षर का बुनियादी मोड़ आता था। 3. ध्वनि द्वारा चिन्ह की पहचान करने लगे। 4. परिवेश की चीजों के नाम पूछे व चित्र बनाते है व प्रथम ध्वनि व चिन्ह की पहचान करने लगे।	1. वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट के अक्षर को जोड़कर अर्थपूर्ण शब्द का निर्माण कर चित्र बनाना, 2. शब्दों को धारा प्रवाह से पढ़ना, 3. शब्द को लिख लेते है।	1. फ्लैश कार्ड़ द्वारा छोटे–छोटे वाक्य का निम्रण करना। 2. कविता का पढ़न व लेखन कर लेते हैं 3. वर्ण समूह–2 के वर्ण / अक्षर की पहचान ध्वनि व चिन्ह की पकड़ शब्दों का श्रुतलेख लिखना
बड़े बच्चे	1. वर्ण / अक्षर पहचान नही थी। वर्ण / अक्षर के बुनियाद आते थे। 2. शब्द की शुरूआती ध्वनि की पहचान तथा वर्ण समूह–1 के वर्णो की पहचान 3. परिवेश से जुड़ी चीजों के शब्दों के चित्र बनाना	1. वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट से पास–पास के शब्दों को जोड़ना व तथा उनके चित्र बनाना 2. दो शब्दों का पठन तथा लेखन (वर्ण समूह–1)	1. अक्षर चार्ट से शब्द निर्माण तथा शब्दों के चित्र बनाना। 2. शब्द, वाक्य, पठन तथा लेखन कविता पठन। 3. वर्ण समूह–2 के अक्षर / वर्ण की पहचान तथा लेखन पास–पास के अक्षरों से शब्द निर्माण व चित्र

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

12.1 छोटे व बड़े बच्चों की माहवार तुलनात्मक प्रगति रिपोर्ट :

1. अक्टूबर 2009 से नवम्बर 2010 :

1. दोनों स्तर के बच्चे कुछ वर्ण/अक्षर की पहचान कर लेते है व इनमें कुछ वर्णो के बुनियादी मोड़ की समझ भी हैं।
2. शब्द की शुरूआती ध्वनि की समझ भी हैं।
3. वर्ण समूह–1 के वर्ण से शुरू होने वाले चीजों के नाम बता देते है जो उनके परिवेश से जुड़े हुए हैं व उनके चित्र भी बना देते हैं।

2. दिसम्बर 2009 व जनवरी 2010

1. वर्ण समूह–1 के अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाना व अर्थ निर्माण के लिए चित्र बनाना।
2. परन्तु छोटी आयु के बच्चे वर्ण समूह–1 के अक्षर चार्ट से पास–पास व दूर–दूर व ऊपर–नीचे के अक्षरों को जोड़कर अर्थपूर्ण शब्द बना रहे है एवं उनके अर्थ को दर्शाने के लिए चित्र भी बना लेते है। जबकि बड़ी आयु के बच्चे बहुत कम चित्र बनाते है।

3. फरवरी व मार्च 2010

1. बड़ी आयु के बच्चे अक्षरों से शब्द खोज पास–पास के अक्षर को जोड़कर करते है। जबकि छोटी आयु के बच्चे शब्द निर्माण के साथ–साथ मारवाड़ी शब्द भी खोजते है उनके चित्र भी बनाते है। छोटी आयु के बच्चे फ्लैश कार्ड़ द्वारा भी छोटे–छोटे वाक्य का निर्माण कर लेते है। छोटी आयु के बच्चों में रचनात्मकता ज्यादा है। वह बहुत सहज तरीके से शब्दों के चित्र बनाते है। जबकि बड़ी आयु के बच्चों में चित्र बनाने की झिंझक है। छोटी आयु के बच्चे स्वतंत्र रूप से शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ते हैं। जबकि बड़ी आयु के बच्चे धर के काम व चिन्ताओं से ग्रसित होने के कारण पूर्ण रूप से शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ नहीं पाते है। दिनभर के कार्य के कारण रात्रिशाला में थके हुए आते है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

13. निष्कर्ष :

1. बड़े बच्चों में पठन–लेखन के अवलोकन के दौरान यह पाया गया कि बड़े बच्चों में उनके परिवार की जिम्मेदारी, आर्थिक परेशानी, तनाव आदि का प्रभाव उनंकी शिक्षा पर पड़ता है। जिससे उनके सीखने की गति कम हो जाती हैं।
2. बड़े बच्चों को छोटे बच्चों के साथ पढ़ने में असहजता महसूस होती हैं।
3. शिक्षा में बच्चों के परिवेश के शब्द तथा उनकी भाषा को कक्षा में महत्त्व दिया जाएं तो बच्चे सरलता से पठन व लेखन से अपना सम्बन्ध बना लेते हैं।
4. बड़े बच्चों की सामाजिक परिस्थितियों को समझना व उनके तनावपूर्ण स्थिति के प्रति संदेवनशील होकर ही उन्हें शिक्षा से जोड़ा जा सकता हैं।

14 सीख :

1. इस अध्ययन से पता चला कि शिक्षा को बच्चों पर थोपा नहीं जा सकता बच्चे अपनी गति से पढ़ना–लिखना सीखते हैं। विशेषकर रात्रिशाला के बच्चे।
2. बच्चों को परिवेश व उनकी भाषा जोड़कर बच्चे कैसे पढ़ना लिखना सीखे।
3. बच्चों में प्रारम्भिक शिक्षा के किस तरीके की पद्धति हो यही एक शिक्षा की नीव है। अध्ययन से पता चला।
3. बच्चों की पारिवारिक समस्याओं को ध्यान में रखते हुए अध्यापक को संवेदनशील होना चाहिए।
4. बच्चों के परिवेश को नजदीक से समझने का मौका मिला।
5. बच्चे अपनी कल्पना से जो चित्र बनाते है। उनकों महत्त्व देने से बच्चा अधिक सक्रिय व क्रियाशील होता है।
6. इस रिसर्च के द्वारा हमें यह सीख मिली कि इन बच्चों की शिक्षण प्रक्रिया को करीब से समझना इनके पढ़ने–लिखने के तौर तरीकों को समझने का मौका मिला।
7. बच्चों के स्वभाव, आदत, दिनचर्चा को समझने का मौका मिला।
8. बच्चों के पढ़ने–लिखने में आ रही रूकावटों को समझने की सीख मिली।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

15 सुझाव :

1. बच्चों को उनके परिवेश की भाषा से जुड़कर पढ़ाना चाहिए ताकि पढ़ना लिखना समझ के साथ सीख सकें।
2. इस अध्ययन के लिए हमे बहुत कम समय मिला। यदि 1 साल का समय दिया जाता तो हम इन बच्चों के अध्ययन करके एक ठोस नतीजे पर पहुंच पाते।
3. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के बच्चों के साथ रिसर्च करने का मौका मिलना चाहिए। ताकि बच्चों में पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया को समझा जा सके।
4. पढ़े–लिखे व अनपढ़ परिवेश से आने वाले बच्चों के अन्तर को भी समझना व उनके नजरीये को समझना।
5. अभिभावक बैठक करके बच्चों की शिक्षण प्रगति से अभिभावकों को अवगत कराना।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor